सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" जीवन का नियम सीधा है, जो करना है करो
बस भुगतने के लिए तैयार रहना ...!! "

अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–176 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, बुधवार 15 जुलाई 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

भिलाई इस्पात संयंत्र 250 टन लोहा चोरी में जीएसटी का शिकंजा

12 कारोबारियों को नोटिस, 450 ठेकेदारों की लिस्ट तैयार, 4 महीने में 3250 टन चोरी की आशंका

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

बीएसपी से 250 टन लौह स्क्रैप चोरी कांड अब कर चोरी तक पहुंच गया है। राज्य जीएसटी विभाग ने मामले में सीधे एंट्री ली है। विभाग ने प्लांट में स्क्रैप, कोल, डस्ट और ट्रांसपोर्टेशन का ठेका लेने वाली 12 से ज्यादा कंपनियों की सूची बना ली है। सभी को जल्द नोटिस जारी कर पूछताछ की जाएगी।

सोमवार को जीएसटी टीम ने फरार आरोपी मो. सलीम के एके ट्रेडर्स के गोदाम पर नोटिस चस्पा किया। जेवरा सिरसा स्थित उस गोदाम को भी नोटिस भेजा जाएगा जहां से बड़ी मात्रा में ऑस्ट्रेलियन कोक जब्त हुआ था।

जीएसटी ने भिलाई–3 पुलिस और क्राइम ब्रांच से केस की पूरी रिपोर्ट मांगी है। साथ ही बीएसपी से जुड़े करीब 450 ठेकेदारों की सूची तैयार की गई है। स्क्रैप–कोल–डस्ट के परिवहन से जुड़े ठेकेदारों से दस्तावेज तलब कर टैक्स देनदारी का आकलन होगा।

सुनियोजित था पूरा नेटवर्क

पुलिस जांच में खुलासा हुआ है कि पिछले 4 महीने में बीएसपी से करीब 3250 टन लौह स्क्रैप चोरी होने की आशंका है। 26 मई को भिलाई–3 पुलिस और एटीएस ने ग्राम अकलोरडीह स्थित एके ट्रेडर्स पर दबिश देकर 250 टन स्क्रैप जब्त किया था। साथ में हाइवा, ट्रक, चेन माउंटेन, बैकहो लोडर समेत 3.22 करोड़ की संपत्ति भी पकड़ी गई।

अब तक बीएसपी के एक महाप्रबंधक समेत 15 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। इनका संबंध मास्टरमाइंड संजय सिंह से बताया जा रहा है। हिमांशु, गिरीश खंडेलवाल, संजय का बेटा अभय और मो. सलीम अभी फरार हैं।

11 फैक्ट्रियां मिलीं बंद

पूछताछ में रसमड़ा और छावनी औद्योगिक क्षेत्र की 11 इकाइयों के नाम सामने आए। पुलिस ने सत्यापन किया तो अधिकांश बंद मिलीं। जिन इकाइयों के नाम आए हैं उनमें पिलानिया इंडस्ट्रीज टीएमटी, अग्रवाल मिनरल्स, यश इंडस्ट्रीज, तारकेश इंटरप्राइजेज, आरपी ट्रेडर्स, कापको और जीएन इंडस्ट्रीज शामिल हैं।

उद्योग विभाग अब इन इकाइयों की वैधता और औद्योगिक जमीन के दुरुपयोग की जांच करेगा। बीएसपी और सीआईएसएफ की संयुक्त टीम भी जांच में जुटी है। सुरक्षा में चूक को लेकर जल्द ही सीआईएसएफ अधिकारियों से पूछताछ होगी।

एसपी विजय अग्रवाल ने कहा, "बीएसपी स्क्रैप चोरी की जांच लगातार जारी है। जीएसटी को सभी जरूरी जानकारी दी जा रही है। तथ्यों के आधार पर आगे कार्रवाई की जाएगी।"

श्रद्धालुओं ने महाप्रभु जगन्नाथ के नवयौवन रूप का किया दर्शन

श्री जगन्नाथ मंदिर, सेक्टर–4 में नेत्र उत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

श्री जगन्नाथ मंदिर सेक्टर–4 में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी की 57वीं रथयात्रा महोत्सव 2026 मनाने जा रही है। इसी क्रम में 14 जुलाई 2026 को, महाप्रभु का नेत्र उत्सव कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया।

परम्परागत पूजा और नवयौवन दर्शन: नेत्र उत्सव का आयोजन परम्परा अनुसार किया गया। देव स्नान पूर्णिमा के पश्चात लंबी बीमारी के बाद आज महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी के मंदिर के पट खोले गये। उत्कल समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व परितोष पाणिग्रही द्वारा परम्परागत पूजा अर्चना और हवन–पूजन सम्पन्न किया गया। पुरोहित पितवास पाढ़ी ने संपूर्ण विधि विधान से महाप्रभु श्री जगन्नाथ स्वामी को रत्न सिंहासन पर आरुढ़ किया। पूजा अर्चना के पश्चात मंगलध्वनि व घंटावादन के साथ श्रद्धालुओं ने प्रभु का प्रथम दर्शन किया। नेत्र उत्सव के दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं ने महाप्रभु के नवयौवन रूप का दर्शन किया। आज रथ पर ध्वज भी स्थापित किया गया।

सफल आयोजन के लिए योगदान: इस उत्सव को सफल बनाने में जगन्नाथ समिति के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सतपथी व महासचिव सत्यवान नायक सहित समिति के पदाधिकारी सर्वश्री अनाम नाहक, भीम स्वांई, बीसी बिस्वाल, बसंत प्रधान, डी त्रिनाथ, वृंदावन स्वांई, निरंजन महाराणा, सुशान्त सतपथी, प्रकाश स्वांई, कवि बिस्वाल, कैलाश पात्रो, कालू बेहरा, रंजन महापात्र, जगन्नाथ पटनायक, बीस केशन साहू, सीमांचल बेहेरा, एस दलाई, वी के होता, रवि महाकुड़, हिमांशु शांती, सुदर्शन शांती ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस उत्सव में बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

रथयात्रा हेतु तैयारी और विशेष अनुरोध: महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा 16 जुलाई (गुरुवार) को दोपहर 1 बजे सेक्टर–4, सड़क–15 में स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर से प्रारंभ होकर सेंट्रल ऐवेन्यू होते हुये सेक्टर–10 में निर्मित भव्य गुण्डिचा मंडप में पंहुचेगी। मुख्य अतिथि के रुप में भिलाई इस्पात संयंत्र के डायरेक्टर इंचार्ज चितरंजन महापात्र के करकमलों से छेरा पंहरा का धार्मिक अनुष्ठान संपन्न किया जायेगा। यह परम्परा पुरी के महाराज सम्पन्न करते है।

दोपहर 2:30 बजे मंदिर से रथ होगा रवाना : सभी श्रद्धालुओं से अनुरोध है कि वे इस पवित्र व महत्वपूर्ण कार्यक्रम में उपस्थित होकर महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी का पुण्य दर्शन प्राप्त करें। रथयात्रा पंहडी विजय कार्यक्रम दोपहर 1 बजे प्रारंभ कर दिया जाएगा और 2:30 बजे मंदिर से रथ प्रस्थान होगा।

महादेव सट्टा ऐप कांड में ईडी का बड़ा वार

Ebix के चेयरमैन विकास गर्ग दिल्ली से गिरफ्तार, 940 करोड़ की संपत्ति पहले ही कुर्क

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ की राजनीति में भूचाल लाने वाले महादेव सट्टा ऐप मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने मंगलवार को बड़ा एक्शन लिया। ED ने शेयर बाजार की लिस्टेड कंपनी एराया लाइफस्पेसेज के प्रमोटर और Ebix के चेयरमैन विकास गर्ग को दिल्ली स्थित आवास से गिरफ्तार कर लिया। दिल्ली की तीस हजारी कोर्ट ने 24 घंटे की ट्रांजिट रिमांड दी है। इसके बाद गर्ग को पूछताछ के लिए रायपुर लाया जा रहा है। बुधवार को उसे विशेष PMLA कोर्ट में पेश किया जाएगा। एऊरिमांड की मांग भी कर सकती है।

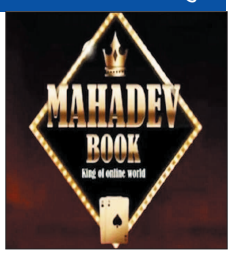

940 करोड़ की संपत्ति पहले ही अटैच

गिरफ्तारी से 4 दिन पहले ही ED ने विकास गर्ग, उसके परिवार और स्वामित्व वाली कंपनियों की 940.77 करोड़ रुपए की चल–अचल संपत्ति कुर्क की थी। इसमें दिल्ली का आलीशान घर, गोवा और नैनीताल की प्रॉपर्टी, बैंक खातों की रकम और एबिक्स कंपनी में 75% से अधिक हिस्सेदारी शामिल है। ED का आरोप है कि ये सभी संपत्तियां महादेव ऑनलाइन बुक और स्काई एक्सचेंज से कमाए गए काले धन से खरीदी या बनाई गई थीं।

काला धन सफेद करने के लिए खरीदी अमेरिका की कंपनी

जांच में सामने आया कि विकास गर्ग ने बेटिंग ऐप से कमाए 940 करोड़ रुपए को शेल कंपनियों और फर्जी एंट्री ऑपरेटरों के जरिए कई लेयर में घुमाया। इसके बाद अगस्त 2024 में इस रकम को FPI के जरिए एराया लाइफस्पेसेज के QIP में लगाया और उसी पैसे से अमेरिका की दिवालिया सॉफ्टवेयर कंपनी एबिक्स का अधिग्रहण किया।

ED का कहना है कि एबिक्स को व्यावसायिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि काली कमाई को सफेद करने के लिए खरीदा गया था। विकास गर्ग विकास ईकोटेक, विकास लाइफकेयर और एराया लाइफस्पेसेज का भी प्रमोटर है।

महीने में 450 करोड़ का धंधा

दुर्ग पुलिस की FIR के आधार पर शुरू हुई जांच में अब आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल समेत कई राज्यों के केस भी जुड़े हैं। ED के मुताबिक महादेव ऐप का नेटवर्क विदेशों से संचालित था। फ्रेंचाइजी–पैनल सिस्टम से देशभर में एजेंट–सब एजेंट बनाए गए और हर महीने 450 करोड़ से अधिक की अवैध कमाई की जाती थी।

अब तक 3800 करोड़ की कुर्की

इस मामले में एऊपहले 7 प्रोविजनल अटैचमेंट ऑर्डर जारी कर 2825 करोड़ की संपत्ति कुर्क कर चुकी है। ताजा 940 करोड़ की कुर्की के बाद अब तक कुल करीब 3800 करोड़ की संपत्तियां अटैच हो चुकी हैं। स्पेशल PMLA कोर्ट में मुख्य और पूरक अभियोजन शिकायतें दाखिल हो चुकी हैं। सुनवाई जारी है।

जेपी सीमेंट के कर्मचारी ने आर्थिक तंगी से तंग आकर की आत्महत्या

वेतन बकाया और नौकरी की अनिश्चितता से था परेशान

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

भिलाई जयपी सीमेंट लिमिटेड (BJCL) में कार्यरत 35 वर्षीय कर्मचारी पुष्पेंद्र परमार ने बुधवार को राधिका नगर स्थित अपने निवास पर आत्महत्या कर ली। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार आर्थिक तंगी और वेतन न मिलने से परेशान होकर उसने यह कदम उठाया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

कई साल से रुका था वेतन

मूल रूप से सतना, MP के रहने वाले पुष्पेंद्र पिछले कई वर्षों से BJCL में कार्यरत थे। कर्मचारियों का आरोप है कि कंपनी ने उन्हें न तो कई सालों से वेतन दिया और न ही काम से निकाला। कंपनी की CIRP प्रक्रिया के चलते भविष्य को लेकर अनिश्चितता बनी हुई थी। पुष्पेंद्र अपने पीछे वृद्ध माता–पिता, पत्नी और छोटे बच्चों को छोड़ गए हैं। उनके निधन की खबर से BJCL कर्मचारियों और स्थानीय क्षेत्र में शोक और आक्रोश है।

कर्मचारियों ने निष्पक्ष जांच की मांग की

कमचारी प्रतिनिधियों ने कहा कि CIRP, वेतन बकाया और नौकरी की अनिश्चितता के कारण BJCL के कमचारी और उनके परिवार लंबे समय से मानसिक और आर्थिक दबाव झेल रहे हैं।

उन्होंने केंद्र–राज्य सरकार, समाधान पेशेवर IRP/RP, समिति ऑफ क्रेडिटर्स CoC और संबंधित पक्षों से मांग की कि कमचारियों के लंबित वेतन और अन्य वैधानिक देयों का शीघ्र समाधान किया जाए, ताकि भविष्य में किसी अन्य परिवार को ऐसी त्रासदी न झेलनी पड़े। BJCL कर्मचारी परिवार ने दिवंगत पुष्पेंद्र परमार को श्रद्धांजलि अर्पित कर शोकाकुल परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

वायरल वीडियो से बेनकाब हुई गुंडागर्दी, युवती से मारपीट करने वाली मुख्य आरोपी नूरी खान गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / रायगढ़

सोशल मीडिया पर वायरल हुए युवती से मारपीट के वीडियो के आधार पर कोतवाली पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी नगमा खान उर्फ नूरी को गिरफ्तार कर लिया है। घटना में शामिल दो नाबालिग बालिकाओं के विरुद्ध भी किशोर न्याय अधिनियम के तहत वैधानिक कार्रवाई की गई है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शि मोहन सिंह ने वायरल वीडियो का तत्काल संज्ञान लेते हुए कोतवाली पुलिस को आरोपियों की पहचान कर सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए थे। पुलिस ने वीडियो की जांच कर कुछ ही घंटों में मुख्य आरोपी तक पहुंचकर उसे दबोच लिया।

क्या है पूरा मामला : 19 वर्षीय पीड़िता ने कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराई कि 30 जून 2026 की शाम करीब 4 बजे वह सहेली के साथ मोटरसाइकिल से थोक बाजार से लौट रही थी। मेरीन ड्राइव रोड स्थित पुष्पवाटिका गार्डन के पास दो युवतियों ने बाइक आगे लगाकर रास्ता रोका और गाली–गलौज करते हुए मारपीट शुरू कर दी। विरोध करने पर उन्होंने अपने रिश्तेदारों को बुलाया, जिनमें नगमा खान उर्फ नूरी भी शामिल थी। इसके बाद सभी ने मिलकर लात–घूंसों से मारपीट की। पीड़िता का कहना है कि राहगीरों के बीच–बचाव के बाद आरोपियों ने सेल्फी भी ली।

पीड़िता की रिपोर्ट पर थाना कोतवाली में अपराध क्रमांक 375/2026 इतर की धारा 296, 115(2), 126(2), 351(3) एवं 3(5) के तहत दर्ज किया गया। पुलिस ने मुख्य आरोपी नगमा खान उर्फ नूरी, पति खबीब खान, उम्र 38 वर्ष, निवासी चांदनी चौक, फौजदारपारा को गिरफ्तार कर लिया है। घटना में शामिल दोनों बाल अपचारियों के विरुद्ध भी विधि अनुसार कार्रवाई की गई।

एबीयूएस भिलाई में भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा पर कल शाम सिविल सेंटर चौक से होगा महाप्रसाद वितरण

भिलाई। अखिल भारतीय उड़िया समाज द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा पर्व पर महाप्रसाद का वितरण किया जाएगा। महाप्रसाद वितरण 16 जुलाई की शाम से सिविल सेंटर चौक, भिलाई में होगा। कार्यक्रम में जिले भर से सैकड़ों की संख्या में समाज के लोग शामिल होंगे। कार्यक्रम प्रदेश अध्यक्ष जेएम तांडी के नेतृत्व में आयोजित किया जाएगा। समाज की ओर से सभी लोगों से बढ़–चढ़कर हिस्सा लेकर महाप्रसाद ग्रहण करने की अपील की गई है। यह जानकारी महासचिव तरुण निहाल और कोषाध्यक्ष दीनबंधु तांडी ने दी।

महापौर परिषद की बैठक में 14 विषयों पर चर्चा, 9 प्रस्तावों को मंजूरी

केनाल रोड के 3 चौकों के नामकरण, सुरक्षा गार्ड भुगतान और स्ट्रीट लाइट संधारण को स्वीकृति

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई की महापौर परिषद की बैठक महापौर नीरज पाल की अध्यक्षता और निगम आयुक्त सुरूचि सिंह, कक्षर की उपस्थिति में संपन्न हुई। बैठक में शहर के विकास और नागरिक सुविधाओं से जुड़े 14 महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा कर 9 प्रस्तावों को स्वीकृति और अनुशंसा प्रदान की गई।

प्रमुख निर्णय

1. चौकों का नामकरण: केनाल रोड के तिराहों और चौराहों के नाम तय किए गए। केनाल रोड जीरो पॉइंट का नाम गणेश तिराहा चौक, क्रांति मार्केट चौक का नाम शहीद भगत सिंह चौक और जीई रोड से श्रीराम चौक जाने वाले चौक का नाम बोलबम चौक रखा गया।

2. सुरक्षा व्यवस्था: निगम की संपत्तियों की सुरक्षा के लिए सुरक्षा गार्ड व्यवस्था के दो माह के देयक भुगतान और संबंधित वित्तीय–प्रशासकीय स्वीकृति को मंजूरी मिली।

3. अन्य प्रस्ताव: डोर–टू–डोर राजस्व कर वसूली काउंटरों का किराया निर्धारण, खुर्सीपार स्थित पूर्व निर्मित स्टेडियम एवं दुकानों के तकनीकी संधारण कार्य के लिए अनापत्ति, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका की नियुक्ति हेतु अंतिम योग्यता सूची, वार्ड 69 एवं 70 में सीवरेज लाइन कार्य के लिए सिविल अनुभवी एजेंसी को शामिल करने की स्वीकृति, लीज नवीनीकरण वाले भवनों के लिए भवन अनुज्ञा 30 सितंबर 2026 तक अनिवार्य। इस अवधि में अनुज्ञा लेने वाले भू–स्वामियों को निर्माण अवधि 2 वर्ष दी जाएगी।

टेंडर और रखरखाव

नागरिकों को बेहतर मूलभूत सुविधाएं देने के उद्देश्य से निगम क्षेत्र की स्ट्रीट लाइटों के वार्षिक संचालन एवं संधारण कार्य को जोनवार निविदा के लिए पुनः निविदा निकालने का निर्णय लिया गया। इसी तरह वार्ड 70 में नवनिर्मित मंगल भवन के चारों ओर गार्डन सौंदर्यीकरण एवं पार्किंग निर्माण कार्य के लिए भी पुनः निविदा की जाएगी। खुर्सीपार स्टेडियम एवं दुकानों को सलाहकार समिति में रखने पर भी सहमति बनी।

महापौर परिषद के प्रभारी सदस्य लक्ष्मीपति राजू, सीजू एन्थोनी, एकांश बंछोर, आदित्य सिंह, साकेत चंद्राकर, चंद्रशेखर गंवई, मन्नान गफ्फार खान, लालचंद वर्मा, मालती ठाकुर, रीता सिंह गेरा, नेहा साहू। अपर आयुक्त राजेन्द्र कुमार दोहरे, मुख्य अभियंता अजीत कुमार तिग्गा, उपायुक्त नरेन्द्र कुमार बंजारे, दिनेश कोसरिया, जोन आयुक्त येशा लहरे, अमरनाथ दुबे, कुलदीप गुप्ता सहित अन्य अधिकारी भी मौजूद थे।

भिलाई निगम की नई आयुक्त सुरुचि सिंह ने संभाला मोर्चा

नगर पालिक निगम भिलाई की नव–नियुक्त आयुक्त सुश्री सुरूचि सिंह ने कार्यभार संभालते ही मैदानी निरीक्षण शुरू कर दिया है। शहर की स्वच्छता और मूलभूत व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से उन्होंने सोमवार को जोन 1 और जोन 2 का सघन दौरा किया। आयुक्त ने सबसे पहले जोन 1 नेहरू नगर स्थित SLRM सेंटर का निरीक्षण किया। वहां कचरा पृथक्करण की प्रक्रिया देखी और स्वच्छता दीदियों से चर्चा कर उनकी समस्याएं जानीं। इसके बाद एमजे कॉलेज के पास कोसा नाला पहुंचकर वर्षा ऋतु को देखते हुए सफाई व्यवस्था और जलभराव रोकने के पुख्ता इंतजाम करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। जोन 2 में आयुक्त ने सेंटर की क्षमता और स्वच्छता मानकों की समीक्षा की। इसके बाद नवनिर्मित डॉग हाउस का निरीक्षण कर आवारा कुत्तों के रखरखाव, टीकाकरण और बंध्याकरण के लिए बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने को कहा। गोठान में भी मवेशियों के लिए चारा–पानी और अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

विधायक चंद्राकर ने वार्ड 37 जोरातराई में 1 करोड़ के विकास कार्यों की रखी आधारशिला

हमारी सरकार जो कहती है वो करती है, हम लगातार आम जनता के जीवन स्तर को उठाने के लिए काम कर रहे हैं

नई दृष्टिबिंदु / रिसाली-भिलाई

डबल इंजन की सरकार में क्षेत्र का तेजी से विकास हो रहा है। इसी कड़ी में आज दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने रिसाली नगर निगम अंतर्गत ग्राम जोरातराई के वार्ड क्रमांक 37 में लगभग 1 करोड़ रुपये की लागत के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन कर आधारशिला रखी। इस अवसर पर विधायक ललित चंद्राकर ने अपने संबोधन में कहाः भारतीय जनता पार्टी विकास पर विश्वास करने वाली पार्टी है। हमारी सरकार जो कहती है वो करती है। हम लगातार आम जनता के जीवन स्तर को उठाने के लिए काम कर रहे हैं। रिसाली क्षेत्र में सड़क, नाली, बिजली, पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं का विस्तार तेजी से किया जा रहा है ताकि हर नागरिक को बेहतर सुविधा मिल सके।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी के तहत छत्तीसगढ़ की विष्णु सरकार ने बहुत कम समय में अपने प्रमुख वादों को पूरा किया है।

श्री चंद्राकर ने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएं धरातल पर उतर रही हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत हर गरीब को पक्का मकान दिया जा रहा है। महतारी वंदन योजना से प्रदेश की बहनों को हर महीने 1000 रुपये की आर्थिक सहायता मिल रही है। कृषक उन्नति योजना के अंतर्गत किसानों को 3100 रुपये प्रति क्विंटल धान का बोनस मिल रहा है। आयुष्मान भारत योजना से 5 लाख तक का मुफ्त इलाज उपलब्ध है। तीर्थ दर्शन योजना से बुजुर्गों को धार्मिक स्थलों के दर्शन कराए जा रहे हैं। ये सभी योजनाएं मोदी की गारंटी हैं और विष्णुदेव साय जी की सरकार इन्हें पूरी निष्ठा के साथ लागू कर रही है।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से रिसाली नगर निगम महापौर शशि सिन्हा, जिला मंत्री शैलेन्द्र शेंडे, मंडल अध्यक्ष राजू राकेश जंघेल, विधायक प्रतिनिधि गोविन्द साहू, नेता प्रतिपक्ष शैलेन्द्र साहू, पार्षद विक्की खिलेन्द्र चंद्राकर, रोहित धनकर, सरिता देवांगन, ईश्वरी सिन्हा, ममता सिन्हा, महिला मोर्चा अध्यक्ष शिखा तिवारी, हरीश नायक, महामंत्री नरेन्द्र निर्मलकर, मंडल मंत्री इंद्रजीत सोनी, रंजन सिंहा, मंडल उपाध्यक्ष राजू राम जी, वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता एम. लक्ष्मण राव, डी. साईं मजी, बूथ अध्यक्ष परमेश्वर, देवेन्द्र साहू, हर्ष चंद्राकर, रंजना मानिकपुरी, देवेश साहू, डॉ. पावर्ती कुर्रे, दुर्गेश साहू, अनुसूचित जाति मोर्चा मंडल अध्यक्ष केशव महिपाल, नारायण निर्मलकर, योगेश महिपाल जी, साहू समाज अध्यक्ष संजय साहू, यादव समाज अध्यक्ष मोहन लाल यादव, खेमलाल साहू, गायत्री यादव, देवेन्द्र साहू, नंदकुमार, विकास साहू सहित बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।

खास खबर

सुपेला रावणभाठा में तोड़फोड़ पर विधायक सेन नाराज, बोले— बरसात में बिना सूचना कार्रवाई करने वाले अधिकारियों पर होगी कार्रवाई

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

भिलाई के सुपेला स्थित रावणभाठा क्षेत्र में नगर निगम द्वारा बुलडोजर चला कर 40 से अधिक दुकानों को हटाने की कार्रवाई के बाद वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन ने नाराजगी जताई है। विधानसभा के मानसून सत्र के दूसरे दिन की कार्रवाई समाप्त होने के बाद जैसे ही उन्हें इस कार्रवाई की जानकारी मिली, उन्होंने निगम अधिकारियों के रवैये पर सवाल उठाए।

विधायक रिकेश सेन ने कहा कि बरसात के मौसम में इस प्रकार की कार्रवाई से प्रभावित परिवारों और दुकानदारों के सामने आजीविका का संकट खड़ा हो सकता है। उन्होंने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसी बड़ी कार्रवाई से पहले स्थानीय विधायक को विश्वास में लेना चाहिए था, लेकिन निगम अधिकारियों ने बिना किसी सूचना के मनमाने ढंग से कार्रवाई कर दी। उन्होंने कहा कि यदि अतिक्रमण हटाने जैसी कार्रवाई आवश्यक भी थी, तो इसके समय और तरीके पर संवेदनशीलता बरती जानी चाहिए थी। बरसात के बीच लोगों की रोजी-रोटी प्रभावित करने वाली कार्रवाई उचित नहीं कही जा सकती।

विधायक ने स्पष्ट कहा कि बिना विधायक को जानकारी दिए और जनहित की अनदेखी कर कार्रवाई करने वाले जिम्मेदार निगम अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई कराई जाएगी। जनता के हितों की रक्षा उनकी प्राथमिकता है और किसी भी अधिकारी को मनमाने तरीके से कार्य करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

गौरतलब है कि नगर निगम ने रावणभाठा क्षेत्र में कथित अवैध अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई करते हुए 40 से अधिक दुकानों को हटाया। बताया जा रहा है कि प्रभावित लोगों को तीन दिन पहले नोटिस जारी किया गया था। हालांकि, कार्रवाई के समय को लेकर स्थानीय स्तर पर असंतोष देखने को मिला है।

जिले में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था हो रही है तार-तार एग्रीमेन्ट व इस्टीमेट बनाये बिना कर दिया 7 लाख रु.का भुगतान

दुर्ग। ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत और जिला पंचायत को मिलाकर ही त्रिस्तरीय पंचायतराज व्यवस्था स्थापित की गई है। जिसमें ग्राम पंचायत गांव स्तर पर जनपद पंचायत ब्लाक व विकास खंड स्तर पर एवं जिला पंचायत को जिला स्तर पर काम करना है। तीनो स्तर आपस में जुड़े हो और मिलकर काम करें। ऐसा प्रावधान अधिनियम में बनाया गया है लेकिन जिला पंचायत की कार्यशैली से न केवल शासन के आदेश की अवहेलना हो रही है बल्कि पंचायती राज अधिनियम का सरे आम उलंघन भी हो रहा है अंजोरा ख में डी.पी.आर सी. संसाधन केन्द्र के निर्माण के नाम पर भ्रष्टाचार व अनियमितताओं को लेकर जिला पंचायत के सी.ई. ओ. बजरंग दुबे एवं उप संचालक आकाश सोनी के विरुध्द प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री विजय शर्मा संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग एवं पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से शिकायत की गई है।

शिकायत में कहा गया है कि जिला पंचायत अंजोरा ख के डी.पी.आर सी. (जिला पंचायत संसाधन केन्द्र) के निर्माण कार्य में नियमों को पूरी तरह से दरकिनार किया गया है और मनमाने तरीके से प्रशासकीय स्वीकृति जारी की गई है। जनपद पंचायत को भी पूरी प्रक्रिया से दूर रखा गया है। सीधे पंचायत के खाते में सात लाख रुपए जमा कर दिए गए। जबकि काम शुरू होने से पहले पंचायत स्तर पर कोई प्रस्ताव नही बनाया गया था। बाद में बैंक डेट पर प्रस्ताव तैयार किया गया। आश्चर्य व हैरत की बात यह है कि ग्रामीण यांत्रिकीय सेवा विभाग के इंजीनियर ने काम शुरु करने के पहले कोई एस्टिमेट भी तैयार नहीं किया है। शिकायत में कहा गया है कि नियमानुसार कार्य के पहले तकनीकी स्वीकृति प्रदान करना और मूल्यांकन व सत्यापन जरुरी होता है लेकिन इस काम के लिए कोई इंजीनियर नियुक्त ही नही किया गया। इस मामले में शिकायत कर्ता का आरोप है कि विकास कार्य के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर प्रस्ताव पारित करना अनिवार्य होता है लेकिन इस मामले में पंचायत में कोई प्रस्ताव पारित नही हुया था। यह प्रक्रिया पूरी तरह में गैरकानूनी है।

पद्म विभूषण डॉ. तीजन बाई की श्रद्धांजलि सभा में शामिल हुए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

राज्योत्सव में डॉ. तीजन बाई के नाम से लोक कला अलंकरण, शाउमा विद्यालय गनियारी का नाम डॉ. तीजन बाई के नाम से

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

विश्वपटल पर छत्तीसगढ़ की लोक-कला को गौरवान्वित करने वाली, पद्मश्री, पद्मभूषण व पद्म विभूषण से अलंकृत प्रख्यात पंडवानी गायिका स्व. डॉ. तीजन बाई के दशगात्र एवं श्रद्धांजलि सभा में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सम्मिलित हुए। उनके पैतृक गृह ग्राम गनियारी (जिला दुर्ग) में आयोजित इस शोक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री साय ने तैलचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें सादर नमन किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने श्रद्धांजली सभा को संबोधित करते हुए कहा कि स्व. डॉ. तीजन बाई केवल छत्तीसगढ़ ही नहीं, बल्कि पूरे देश की शान थीं और आज हम सभी ऐसी महान विभूति को श्रद्धांजलि देने यहाँ एकत्र हुए हैं। मुख्यमंत्री ने प्रदेश की जनता और राज्य सरकार की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने तथा परिजनों को यह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

उन्होंने कहा कि तीजन बाई के अस्वस्थ होने पर सरकार ने पूरी सजगता से उनके बेहतर उपचार के प्रबंध किए थे, यहाँ तक कि राज्योत्सव के दौरान स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने परिजनों से दूरभाष पर चर्चा कर उनका कुशलक्षेम जाना था और आज उनके अवसान पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित केंद्रीय मंत्रियों ने भी शोक संवेदना व्यक्त की है। कला जगत में उनके इस अद्वितीय योगदान को अक्षुण्ण रखने के लिए मुख्यमंत्री श्री साय ने बड़ी घोषणाएं करते हुए कहा कि राज्योत्सव के अवसर पर प्रतिवर्ष लोककला अलंकरण सम्मान दिया जाएगा, गृह ग्राम गनियारी के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का नामकरण स्व. डॉ. तीजन बाई के नाम पर होगा तथा कला की जीवंत पहचान रहे उनके तंबूरे को रायपुर संग्रहालय में आदरपूर्वक सुरक्षित रखा जाएगा ताकि उनका स्वर्ण अक्षरों में अंकित योगदान आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करता रहे। मुख्यमंत्री श्री साय ने इस अवसर पर डॉ. तीजन बाई के पुत्र दिलहरण पारधी एवं अन्य परिजनों से चर्चा कर पारिवारिक हाल-चाल की जानकारी ली।

सभा को सांसद विजय बघेल, प्रदेश के पर्यटन संस्कृति, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री राजेश अग्रवाल और विधायक पद्मश्री अनुज शर्मा ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने स्व. डॉ. तीजन बाई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाले। साथ ही अपनी भावभिनी श्रद्धांजली अर्पित की। सभा में उपस्थितजनों ने सभा स्थल पर दो मिनट की मौन रख कर मृतात्मा को मौन श्रद्धांजली अर्पित किये। श्रद्धांजली सभा में पद्मश्री आर.एस. बारले, स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव, विधायक डोमन लाल कोर्सेवाड़ा, पूर्व विधायक लाभचंद बाफना, नगर निगम भिलाई चरौदा के महापौर निर्मल कोसरे, छत्तीसगढ़ फिल्म विकास निगम की अध्यक्ष सुश्री मोना सेन, जनपद पंचायत पाटन की अध्यक्ष श्रीमती कीर्ति नायक, संभाग आयुक्त एस.एन. राठौर, आईजी अभिषेक शांडिल्य, कलेक्टर अभिजीत सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल सहित अन्य अधिकारी तथा छत्तीसगढ़ प्रदेश के दूर-दराज से पहुंचे कलाकार, स्थानीय पंचायत प्रतिनिधि और बड़ी संख्या में जनसमुदाय उपस्थित थे।

विधानसभा परिसर में विधायक ललित चंद्राकर ने मां की स्मृति में लगाया बादाम का पौधा

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ विधानसभा परिसर में सोमवार को "एक पेड़ मां के नाम" अभियान के तहत आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने अपनी स्वर्गीय माता पूर्णिमा देवी चंद्राकर की स्मृति में बादाम का पौधा रोपित किया। कार्यक्रम का आयोजन विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह एवं मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर विधायक ललित चंद्राकर ने कहा कि वृक्षारोपण केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम नहीं, बल्कि मातृशक्ति के प्रति सम्मान व्यक्त करने का भी प्रतीक है। उन्होंने अपनी माता की स्मृति में पौधा लगाकर हरित और स्वच्छ भविष्य के निर्माण का संकल्प दोहराया।

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर शुरू हुआ "एक पेड़ मां के नाम" अभियान देशभर में जनभागीदारी के साथ जनआंदोलन का रूप ले चुका है। अभियान का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मां के सम्मान में एक पौधा लगाने के लिए प्रेरित करना तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना है।

कार्यक्रम में मौजूद जनप्रतिनिधियों ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और बढ़ते प्रदूषण जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण समय की आवश्यकता है। पेड़ लगाना और उनका संरक्षण करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है।

इस दौरान भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव, कैबिनेट मंत्री, विधायक, विभिन्न बोर्ड एवं निगमों के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष तथा अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे। सभी ने अपनी-अपनी माताओं के नाम पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।

जिला अस्पताल में स्पायरोमीटर शुरू करने और ब्लड बैंक में रक्तदान शिविर आयोजित कराने की मांग, कलेक्टर सिंह को सौंपा ज्ञापन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

स्व. पांडुरंग राव जिला चिकित्सालय, दुर्ग में स्थापित नई स्पायरोमीटर मशीन का संचालन शीघ्र शुरू कराने तथा ब्लड बैंक में रक्त की कमी दूर करने की मांग को लेकर कलेक्टर अभिजीत सिंह को ज्ञापन सौंपा गया।

ज्ञापन में बताया गया कि जिला चिकित्सालय वर्तमान में 500 बिस्तरों की क्षमता के साथ प्रतिदिन 1000 से अधिक मरीजों को चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध करा रहा है। यहां दुर्ग जिले के अलावा आसपास के जिलों से भी बड़ी संख्या में मरीज उपचार के लिए पहुंचते हैं। अस्पताल के ओपीडी मेडिसिन विभाग में फेफड़ों की जांच के लिए नई स्पायरोमीटर मशीन स्थापित है, लेकिन उसका संचालन शुरू नहीं होने से श्वसन एवं फेफड़ों से संबंधित मरीज आवश्यक जांच और उपचार से वंचित हो रहे हैं।

ज्ञापन में कहा गया कि मशीन बंद होने के कारण मरीजों को निजी अथवा अन्य संस्थानों में जांच करानी पड़ रही है, जिससे आर्थिक रूप से कमजोर एवं सामान्य परिवारों पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ पड़ रहा है। इसलिए जनहित को ध्यान में रखते हुए स्पायरोमीटर मशीन का तत्काल संचालन प्रारंभ कराया जाए। इसके साथ ही जिला चिकित्सालय के ब्लड बैंक में निर्धारित मानकों के अनुरूप रक्त की उपलब्धता नहीं होने का भी मुद्दा उठाया गया। ज्ञापन में विभिन्न सामाजिक संगठनों, संस्थाओं एवं समाजों के सहयोग से शीघ्र रक्तदान शिविर आयोजित कर ब्लड बैंक में पर्याप्त रक्त उपलब्ध कराने की अपील की गई। यह ज्ञापन जिला चिकित्सालय की जीवन दीप समिति के आजीवन सदस्य दिलीप ठाकुर तथा मानद सदस्य प्रशांत डोंगांवकर ने कलेक्टर अभिजीत सिंह को सौंपा। कलेक्टर ने ज्ञापन पर शीघ्र आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया।

लंबित वित्तीय प्रकरणों का निराकरण, निगम कर्मचारियों को मिली बड़ी राहत

स्वायत्तशासी कर्मचारी संघ ने आयुक्त व स्थापना-लेखा शाखा का जताया आभार

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

नगर पालिक निगम दुर्ग के आयुक्त के विशेष प्रयासों एवं सकारात्मक पहल से निगम के अधिकारी-कर्मचारियों के लंबे समय से लंबित वित्तीय प्रकरणों का निराकरण किया गया है। मई 2026 तक की जीपीएफ, एनपीएस, उपादान (ग्रेच्युटी) एवं अवकाश नकदीकरण की देय राशि संबंधित अधिकारी-कर्मचारियों के बैंक खातों में जमा कराई गई है।

इस पहल के अंतर्गत जीपीएफ राशि रुपये 31,77,308, एनपीएस राशि 36,60,544, अवकाश नकदीकरण राशि 54,57,296 एवं उपादान (ग्रेच्युटी) राशि 41,32,662 सहित कुल 1,64,23,810 की राशि का भुगतान किया गया है। स्वायत्तशासी कर्मचारी संघ, नगर पालिक निगम दुर्ग के अध्यक्ष संजय मिश्रा, महामंत्री अनिल सिंह सहित समस्त पदाधिकारियों ने कर्मचारियों के हित

में किए गए इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए आयुक्त एवं स्थापना तथा लेखा शाखा के अधिकारी-कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया है।

संघ पदाधिकारियों ने कहा कि लंबे समय से लंबित वित्तीय प्रकरणों के निराकरण से वर्तमान कर्मचारियों के साथ-साथ सेवानिवृत्त अधिकारी-कर्मचारियों को भी बड़ी राहत मिली है। इससे निगम प्रशासन के प्रति कर्मचारियों का विश्वास और अधिक मजबूत हुआ है। स्वायत्तशासी कर्मचारी संघ ने उम्मीद जताई है कि भविष्य में भी कर्मचारियों से जुड़े सभी वित्तीय एवं सेवा संबंधी प्रकरणों का इसी प्रकार प्राथमिकता एवं समयबद्ध तरीके से निराकरण किया जाता रहेगा।

खास खबर

सड़क सुरक्षा नियमों के उल्लंघन पर बड़ी कार्रवाई, राष्ट्रीय राजमार्ग पर 41 से अधिक वाहनों पर 41 हजार रुपए का जुर्माना

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

सड़क सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए रायगढ़ जिला प्रशासन ने आज राजमार्गों पर अवैध अतिक्रमण और बेतरतीब पार्किंग के खिलाफ व्यापक संयुक्त अभियान चलाया। सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों तथा सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुरूप गठित जिला राजमार्ग सुरक्षा टास्क फोर्स ने शहर के प्रमुख यातायात क्षेत्रों में सघन प्रवर्तन अभियान चलाते हुए राजमार्गों से अतिक्रमण हटाए और नियमों का उल्लंघन करने वाले 41 से अधिक वाहनों पर लगभग 41 हजार रुपए का जुर्माना लगाया।

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी मयंक चतुर्वेदी तथा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शशिमोहन सिंह के निर्देशन में यह अभियान कांशीराम चौक, छातामुड़ा चौक तथा अन्य व्यस्त मार्गों पर संचालित किया गया। अभियान के दौरान एडीएम अपूर्व प्रियेश टोप्पो, एसडीएम महेश शर्मा, उप पुलिस अधीक्षक (यातायात), तहसीलदार, अनुविभागीय अधिकारी (राष्ट्रीय राजमार्ग) तथा जिला परिवहन अधिकारी सहित विभिन्न विभागों की संयुक्त टीम ने मैदानी स्तर पर कार्रवाई की। संयुक्त टीम ने राष्ट्रीय राजमार्ग के राइट ऑफ वे क्षेत्र में किए गए अवैध अतिक्रमणों को तत्काल हटाया। दुकानों के सामने किए गए सड़क विस्तार, अस्थायी शेड, अवैध निर्माण तथा अन्य बाधाओं को हटाते हुए संबंधित लोगों को भविष्य में दोबारा अतिक्रमण नहीं करने की सख्त चेतावनी दी गई।

अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि सड़क सुरक्षा से समझौता किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा। अभियान के दौरान राजमार्गों और प्रमुख चौराहों के आसपास अवैध रूप से खड़े भारी वाहनों एवं अन्य गाड़ियों के विरुद्ध भी कड़ी कार्रवाई की गई। यातायात बाधित करने और दुर्घटना की आशंका बढ़ाने वाले 41 से अधिक वाहनों पर मौके पर ही चालानी कार्रवाई करते हुए लगभग 41 हजार रुपए का अथर्दड वसूला गया। जिला राजमार्ग सुरक्षा टास्क फोर्स ने स्पष्ट किया है कि राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे 15 मीटर की परिधि के भीतर भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) अथवा संबंधित मंत्रालय की पूर्व स्वीकृति के बिना किसी भी प्रकार का निर्माण, लाइसेंस अथवा अनापत्ति प्रमाण-पत्र जारी या नवीनीकृत नहीं किया जाएगा। सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुरूप इस अभियान की विस्तृत अनुपालन रिपोर्ट निर्धारित अवधि में प्रस्तुत की जाएगी।

विस परिसर में एक पेड़ मां के नाम 3.0 अभियान के तहत हुआ वृहद पौधरोपण : मुख्यमंत्री साय

मुख्यमंत्री साय और विस अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने लगाया रुद्राक्ष का पौधा

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ विधानसभा के पावस सत्र के दौरान आज विधानसभा परिसर हरियाली, जनभागीदारी और मातृ सम्मान के भाव से सराबोर नजर आया। श्एक पेड़ मां के नाम 3.0 अभियान के अंतर्गत आयोजित वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत, उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, उप मुख्यमंत्री अरुण साव, संसदीय कार्य मंत्री केदार कश्यप सहित विधानसभा के सभी सदस्यों ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प दोहराया। यह संकल्प केवल वृक्षारोपण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि प्रकृति के संरक्षण, मातृत्व के सम्मान और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित एवं हरित भविष्य के निर्माण का सामूहिक संकल्प बनकर उभरा। कार्यक्रम के दौरान सभी जनप्रतिनिधियों ने अभियान के लिए तैयार विशेष सेल्फी प्वाइंट पर तस्वीरें भी खिंचवाईं तथा प्रदेशवासियों से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनके संरक्षण का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने रुद्राक्ष का पौधा लगाया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर प्रारंभ हुआ श्एक पेड़ मां के नामश अभियान पूरे देश में जनआंदोलन का स्वरूप ले चुका है। यह अभियान केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि अपनी मां के प्रति कृतज्ञता, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और आने वाली पीढ़ियों के प्रति उत्तरदायित्व का सशक्त प्रतीक है। उन्होंने कहा कि जब कोई व्यक्ति अपनी मां के नाम पर पौधा लगाता है तो उस पौधे के साथ उसका भावनात्मक रिश्ता भी जुड़ जाता है और वह उसके संरक्षण के लिए स्वयं प्रेरित होता है। यही भाव इस अभियान को स्थायी, प्रभावी और जनभागीदारी आधारित बनाता है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ विधानसभा में विधायकों द्वारा अपनी माताओं के नाम पर पौधारोपण किया जाना अत्यंत प्रेरणादायी पहल है। विधानसभा परिसर से दिया गया यह संदेश निश्चित रूप से पूरे प्रदेश में पर्यावरण संरक्षण के प्रति नई जागरूकता उत्पन्न करेगा। उन्होंने इस अभियान आयोजन के लिए विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह पहल समाज में वृक्षारोपण को जनआंदोलन बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि आज पूरा विश्व जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, अनियमित वर्षा, बढ़ते तापमान और जैव विविधता के क्षरण जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन परिस्थितियों में वृक्षारोपण केवल पर्यावरणीय कार्यक्रम नहीं, बल्कि मानव जीवन की सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और भावी पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करने का सबसे प्रभावी माध्यम है। उन्होंने कहा कि वृक्ष पृथ्वी के संतुलन के आधार हैं। वे हमें शुद्ध वायु, जल संरक्षण, जैव विविधता का संरक्षण और स्वस्थ पर्यावरण प्रदान करते हैं। इसलिए प्रत्येक नागरिक को अपने जीवन में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए और उसकी देखभाल भी उसी आत्मीयता से करनी चाहिए, जिस भाव से वह अपने परिवार के किसी सदस्य की देखभाल करता है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि राज्य सरकार विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। प्रदेश में वन संरक्षण, हरित आवरण में वृद्धि, जल संरक्षण, जैव विविधता के संवर्धन तथा जनभागीदारी आधारित पर्यावरणीय अभियानों को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि श्एक पेड़ मां के नाम 3.0श अभियान प्रदेश के गांव-गांव, शहर-शहर और प्रत्येक परिवार तक पहुंचेगा तथा प्रकृति संरक्षण को सामाजिक दायित्व और जन आंदोलन का स्वरूप प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक नागरिक अपनी मां के नाम पर एक पौधा लगाकर उसके संरक्षण का संकल्प ले, तो आने वाले वर्षों में उत्कृष्ट मॉडल बन सकता है।

कार्यक्रम में विधानसभा के सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपनी माताओं के नाम पर विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए और उनके संरक्षण का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख सचिव, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग मनोज कुमार पिंगुआ, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख अरुण पाण्डेय सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारी, जनप्रतिनिधि तथा वन विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

अबूझमाड़ का स्वाद पहुँचा विधानसभा- अरक चावल की महक से, दीदियों के हुनर ने जीता जनप्रतिनिधियों का दिल

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

अरक (अथवा अरवा) चावल बिना उबाले (कच्चे) धान से तैयार किया गया चावल है। यह अपनी प्राकृतिक सुगंध, खिले हुए दानों और पोषक तत्वों के लिए जाना जाता है। पारंपरिक खेती के तरीकों से उगाए जाने वाले इन चावलों में एक खास सुगंध होती है जो पकने के दौरान पूरी रसोई को महका देती है।

नारायणपुर के घने जंगलों और दुर्गम पहाड़ियों के बीच बसी अबूझमाड़ की सदियों पुरानी पाक संस्कृति ने छत्तीसगढ़ विधानसभा के गलियारों में अपनी अनूठी छाप छोड़ी। विधानसभा परिसर में आयोजित एक विशेष खाद्य प्रदर्शनी में जब जनप्रतिनिधियों के सामने अबूझमाड़ के पारंपरिक और स्वास्थ्यवर्धक व्यंजन परोसे गए, तो हर कोई इस समृद्ध विरासत का मुरीद हो गया। यह आयोजन केवल व्यंजनों का प्रदर्शन मात्र नहीं था, बल्कि नारायणपुर की जनजातीय संस्कृति, स्थानीय कृषि उत्पादों और महिला सशक्तिकरण की एक शानदार सफलता की कहानी है।

इस विशेष आयोजन में सबसे बड़ा आकर्षण रहा अबूझमाड़ का पारंपरिक श्अरक चावलश्। हल्के पीले रंग और अपनी भीनी-भीनी प्राकृतिक खुशबू के लिए पहचाने जाने वाले इस चावल से बनी खीर ने विधानसभा में मौजूद सभी मंत्रियों, विधायकों और अतिथियों का दिल जीत लिया। इस खीर का स्वाद चखने के बाद जनप्रतिनिधियों ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की और इसे छत्तीसगढ़ की एक अनमोल और दुर्लभ खाद्य धरोहर बताया। अबूझमाड़ के इन पारंपरिक स्वादों को सुदूर अंचलों से निकालकर राज्य के शीर्ष सदन तक पहुँचाने का यह सफर आसान नहीं था। इस पूरी पहल को धरातल पर उतारने में महत्वपूर्ण भूमिका रही। वन मंत्री केदार कश्यप और नारायणपुर कलेक्टर,जिनके मार्गदर्शन और दूरदर्शी प्रयासों ने इस आयोजन को एक बड़े मंच पर स्थापित किया।

इस आयोजन ने छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को तो प्रदर्शित किया ही, साथ ही स्थानीय महिलाओं के कौशल और आत्मनिर्भरता को भी एक नया आयाम दिया है। स्व-सहायता समूह की दीदियों ने अपनी कड़ी मेहनत से साबित कर दिखाया कि यदि सही मंच मिले, तो वनांचल के पारंपरिक ज्ञान को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सराहा जा सकता है। अबूझमाड़ की पाक परंपरा केवल भोजन नहीं, बल्कि हमारी जीवनशैली और प्रकृति के प्रति सम्मान का प्रतीक है। विधानसभा में मिला यह सम्मान हमारे पारंपरिक कृषि उत्पादों और स्थानीय महिलाओं की आत्मनिर्भरता को एक नई दिशा देगा।

साप्ताहिक जलसा

स्वयंसिद्धा

छत्तीसगढ़ की अग्रणी महिला संस्था स्वयंसिद्धा-ए मिशन दिद ए विजन द्वारा गत 7 वर्षों से प्रत्येक सप्ताह संगीत,साहित्य,संस्कृति, स्वास्थ्य, सिनेमा, फोटोग्राफी,कानूनी सलाह आदि समसामयिक विषयों पर नियमित स्तंभ चलाए जाते हैं जिनमें प्रत्येक मंगलवार परिचर्चा का आयोजन किया जाता है। अधिकारियों,जिम्मेदारों, नेताओं,मंत्रियों के विचार तो हम हमेशा सुनते हैं लेकिन आम गृहणियां और माताएं समसामयिक विषयों पर क्या सोचती है इस पर हमने कभी बात नहीं की।

संस्था प्रमुख डॉ. सोनाली चक्रवर्ती ने परिचर्चा का आरंभ करते हुए बताया-"भारत में तलाक (Divorce) के मामलों में पिछले दो दशकों (लगभग 2000 के दशक) से लगातार बढ़ोतरी देखी जा रही है, और पिछले 10 वर्षों में मामलों में लगभग तिगुनी वृद्धि हुई है विभिन्न कानूनी रिपोर्ट्स और सामाजिक अध्ययनों के अनुसार, इस उछाल के प्रमुख कारण हैं- आर्थिक स्वतंत्रता, महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में बढ़ोतरी, जिससे वे व्यक्तिगत निर्णय लेने में अधिक सक्षम हैं, बदलती सामाजिक सोच, अब खराब और असहज शादियों से बाहर निकलने में लोग संकोच नहीं करते। अधिकांश मामलों में पहल महिलाओं द्वारा की जाती है ,शहरीकरण और तनाव, भागदौड़ भरी जिंदगी और संवाद की कमी भी बड़े कारण है। आजकल बच्चों में शादी नहीं करने का फैसला भी आम हो चुका है इस के पीछे कई सामाजिक और व्यक्तिगत कारण हैं।

मुख्य रूप से आर्थिक स्वतंत्रता, करियर को प्राथमिकता, और व्यक्तिगत आजादी की चाह इसके पीछे के प्रमुख कारण हैं। आजकल लड़के और लड़कियां दोनों अपने करियर पर ध्यान दे रहे हैं और खुद कमा रहे हैं। उन्हें किसी और पर आर्थिक रूप से निर्भर रहने की जरूरत नहीं पड़ती। युवाओं को अपनी जिंदगी अपनी शर्तों पर जीना पसंद है। वे किसी के साथ बंधकर नहीं रहना चाहते और अपनी आजादी को किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहते। अक्सर लोग अपनी शादी को लेकर बहुत स्पष्ट होते हैं और जब तक उन्हें अपनी पसंद का सही जीवनसाथी नहीं मिल जाता, वे अकेले रहना पसंद करते हैं। इसके अलावा, समाज में बढ़ते तलाक के मामलों (divorce) को देखकर भी युवाओं में शादी के प्रति हिचकिचाहट पैदा होती है। वर्तमान समय की लड़कियां शादी के बाद अपनी पहचान नहीं खोना चाहतीं और न ही वे ऐसे पारंपरिक ढांचे में ढलना चाहती हैं जहाँ उन्हें अपने करियर या सपनों का बलिदान देना पड़े। क्या इसमें कहीं हमारी पीढ़ी जिम्मेदार है जिस पीढ़ी की महिलाओं ने अपने सपनों को तिलांजलि देकर घर गृहस्ती संभाला लेकिन उन्हें वह सम्मान प्राप्त नहीं हुआ जिसकी वह अधिकारिणी थी। यह देखकर लड़कियों ने मां जैसी जिंदगी नहीं जीने का फैसला किया। आखिर कहां है समस्या?

72 वर्षीया कमलेश आर्य जी कहती हैं -" विवाह क्यों टूट रहे हैं ? यह साधारण नहीं,इसे सृष्टि क्रम को छेड़छाड़ की बात ही समझना चाहिए। सृष्टि से पहले ही वेदों का ज्ञान ईश्वर ने प्राणियों को दे दिया था ,विवाह से संबंधित ऋग्वेद का एक मंत्र इस प्रकार है।

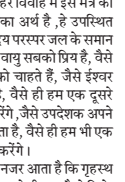

ओम समञ्जंतु विश्वे देवाः,
समापो हृदयानि नौ, सं मातरिश्वा,
सं धाता समु देष्टी दधातु नौ।

हिंदू धर्म के अनुसार हर विवाह में इस मंत्र को जरूर पढ़ा जाता है। इसका अर्थ है ,हे उपस्थित सज्जनों ! हम दोनों के हृदय परस्पर जल के समान मिले हुए रहेंगे ,जैसे प्राण वायु सबको प्रिय है, वैसे ही हम दोनों एक दूसरे को चाहते हैं, जैसे ईश्वर सबको धारण कर रहा है, वैसे ही हम एक दूसरे के सुख दुख को धारण करेंगे ,जैसे उपदेशक अपने श्रोताओं की उन्नति चाहता है, वैसे ही हम भी एक दूसरे का हित व उन्नति करेंगे।

इसके विपरीत आज नजर आता है कि गृहस्थ में यह भाव आ चुका है कि मुझे ही सुख कैसे मिले, जिसके कारण सब दुखी हो रहे हैं । समस्या यही है कि पति-पत्नी एक दूसरे को अपनाना ही नहीं चाहते यदि एक पक्ष भी यह कहने लगे कि तुम अपने रिश्तेदारों को देखो मैं अपने रिश्तेदारों को संभाल लूंगा या संभाल लूंगी, तब परिवार में दरार आनी शुरू हो जाती है। मां-बाप जो बड़े प्यार से बहू या दामाद से रिश्ता जोड़ते हैं उनको समझ ही नहीं आता कि इन परिस्थितियों को कैसे संभालें ,असली परीक्षा घरवालों की शुरू हो जाती है, इसीलिए परिवार वाले और खुद लड़का या लड़की विवाह जैसे पवित्र बंधन में बंधने से डरते हैं । इसका एक कारण परिवारों का टूटना और एकल परिवारों की वृद्धि।

कहते हैं ना स्प्रिंग को जितना दबाओ छोड़ने पर वह उतना ही उछलता है, इसलिए कोई भी पक्ष, एक दूसरे पक्ष को दबाने की चेष्टा ना करे। समस्या वर्तमान समय की है जहां लड़का लड़की शादी से पहले ही एक दूसरे के बारे में सब जान चुके होते हैं ,फिर भी शादी के बाद आपसी सामंजस्य नहीं बिठा पाते । इसका कारण सबको शिक्षा देने वाला ज्ञान का भंडार मोबाइल सबके हाथों में है, इसलिए कोई भी दूसरे को कम समझने की कोशिश ना करें, सभी अपनी-अपनी सहनशक्ति को और बढ़ावें और छोटी-छोटी बातों को नजर अंदाज करने का प्रयत्न करें ।आज जमाने के साथ चलने की जरूरत है, इसमें ही अपनी और सबकी भलाई है । अब माता-पिता बस यही सोच सकते हैं कि जमाना बदल रहा है जिसे स्वीकार करें।

महिला उद्यमी विनीता गुप्ता का कहना है,-"कोई एक कारण नहीं है विवाह टूटने का आजकल और कोई एक दोषी भी नहीं बहुत सारी बातें मिलकर किसी समस्या को जन्म देती हैं और निदान भी। कहते है ना अति हर चीज की बुरी होती है। हम लोग समान अधिकार दिलाने की बात करते करते कब इतने आगे बढ़ गए कि अपनी सभ्यता और संस्कृति पीछे छोड़ आए।

1.मायके वालों का बेटी के घर में अत्यधिक हस्तक्षेप
2.कैरियर संवारने की सलाह पर घर बचाने में इगो की बात
3. 'मैं' की चाह बहुत ज्यादा वहीं 'हम' की भावना खत्म

एक बात बहुत जरूरी कहना चाहूँगी कि मोबाइल ने परिवारों के टूटने में बहुत अहम भूमिका निभाई। शायद बचपन का वो निबंध बिल्कुल सही था विज्ञान वरदान है या अभिशाप। हम स्वयं ही इस वरदान को अभिशाप बना चुके

सेक्टर ५ निवासी गृहणी राजकुमारी कनोजे कहती है-"

आधुनिक जमाना आ गया है अब लड़के लड़कियों के सोच में फर्क आगया है। वे अब अपने हिसाब से जीना पसंद करते है। माता पिता को चाहिए कि वे अपने बेटे और बहू पर अनावश्यक दबाव न बनाये इसमें भी अलगाव की स्थिति बनती है।

अगर सबकुछ ठीक है तो उनको अपने हिसाब से जीने का हक है उनके उपर कोई दबाव नही रहेगा तो वो सुख चैन से जीवन यापन कर पायेंगे। मेरा मानना यह है कि छोटी छोटी बात में तुरंत फैसला लेकर रिश्ता नही तोड़ना चाहिए ,आपसी संवाद और रिश्ते में स्पेस देना बहुत जरूरी है। पहले लडकी की शादी अधिकतम 20 साल में हो ही जाती थी लेकिन अब के समय में लड़की की उम्र 25 साल होने बाद ही रिश्ता तलाशते है ,इससे लड़की के सोच मे भी अंतर आता है परिणाम स्वरूप वो किसी प्रकार का बन्धन बर्दाश्त नही कर पाती चाहे सही हो या फिर गलत ये भी विवाह विच्छेद का एक कारण हो सकता है ।यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि विवाह हो हर हाल में बनाये रखना उचित नही होता ।यदि रिश्ते में गंभीर हिंसा, दुर्व्यवहार या असुरक्षा हो तो कभी कभी अलग होना सुरक्षित और सही निर्णय हो सकता है।

रायपुर निवासी लेखिका शीलू लुनिया कहती हैं -"आजकल

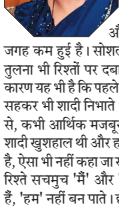

शादियाँ टूटने के पीछे कोई एक कारण नहीं, बल्कि कई बदलाव हैं। शादी की उम्र बढ़ी है, आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ी है, अपेक्षाएँ बढ़ी हैं और सहनशीलता कई जगह कम हुई है। सोशल मीडिया और दूसरों से तुलना भी रिश्तों पर दबाव डालती है। एक बड़ा कारण यह भी है कि पहले लोग बहुत-सी तकलीफें सहकर भी शादी निभाते थे—कभी समाज के डर से, कभी आर्थिक मजबूरी से। इसलिए हर पुरानी शादी खुशहाल थी और हर आज का तलाक गलत है, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। लेकिन आज कई रिश्ते सचमुच 'मैं' और 'तुम' के बीच फँस जाते हैं, 'हम' नहीं बन पाते। छोटी बातों पर संवाद बंद होना, परिवारों का जरूरत से ज्यादा हस्तक्षेप, अवास्तविक उम्मीदें और समझौते को हार समझना रिश्ते को कमजोर कर देते हैं। शादी सिर्फ प्रेम से नहीं चलती—सम्मान, संवाद, धैर्य, विश्वास और एक-दूसरे के लिए थोड़ी जगह बनाने से चलती है।

राजहरा निवासी शीला प्रकाश कहती है -" बढ़ते तलाक आज के संदर्भ में बहुत बड़ी समस्या है। आज के युवा बहुत सोच समझ कर शादियां कर रहे हैं। फिर भी शादियां बहुत दिनों तक टिक नहीं रहीं।

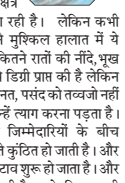

आज लड़कियां हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है। लेकिन कभी सोचा है कि ये कितने मुश्किल हालात में ये सफलता प्राप्त की है। कितने रातों की नींद, भूख प्यास सभी भुला कर ये डिग्री प्राप्त की है लेकिन शादी के बाद उनकी मेहनत, पसंद को तव्वजो नहीं दी जाती। हर क्षेत्र में उन्हें त्याग करना पड़ता है। घर एवं आफिस की जिम्मेदारियों के बीच सामंजस्य बिठाते बिठाते कुंठित हो जाती है। और फिर दोनों के बीच मनमुटाव शुरू हो जाता है। और बात तलाक तक आ जाती है इसके लिए जरूरी है कि परिवार के लोग सपोर्ट करें। उनके कार्यों की सराहना करें। लड़कियों को भी धैर्य पूर्वक अपने परिवार, बच्चों एवं समाज को लेकर चलना चाहिए। तभी वो बच्चों को भी सही संस्कार दे पाएंगी। दोनों को सोचना होगा कि तलाक ले लेना समस्या का समाधान नहीं है एक दूसरे की भावनाओं को समझते हुए जीवन को जीना होगा। तभी दोनों खुश रहेंगे एवं बच्चों की परवरिश सही तरीके से कर सकेंगे।जीवन रूपी रथ को खिंचने के लिए पति-पत्नी रुपी दो पहियो का सामंजस्य बहुत जरूरी है।

मुंगेली निवासी ज्योति गुप्ता कहती हैं -"आज

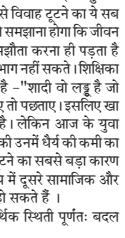

हम सबके एक ,दो बच्चे हैं लड़की ,लड़का का बिना भेदभाव किए हम बच्चों का परवरिश किए हैं।अच्छा पढ़ाई कराना है, आर्थिक रूप से सक्षम बनाना है हमारा उद्देश्य रहा है। बच्चों की इच्छा अनुसार हम उनका विवाह कर रहे है ज्यादातर बच्चे मां बाप से दूर बाहर रह रहे है इनका डर नहीं रह गया। बहुत लड़ते झगड़ते है, बच्चों में सहन शक्ति की कमी कोई भी झुकना नहीं चाहता मेरे विचार से विवाह टूटने का ये सब कारण है। हमें बच्चों को समझाना होगा कि जीवन में हमें कुछ न कुछ समझौता करना ही पड़ता है एवम जिम्मेदारी से हम भाग नहीं सकते। शिक्षिका दुर्गा अधिकारी कहती है -"शादी वो लड्डू है जो खाए सो पछताए,न खाए तो पछताए। इसलिए खा कर ही पछताना ठीक है। लेकिन आज के युवा चाहे लड़का हो या लड़की उनमें धैर्य की कमी का होना ही आज विवाह टूटने का सबसे बड़ा कारण है इसके अतिरिक्त साथ में दूसरे सामाजिक और पारिवारिक कारण भी हो सकते हैं ।

आज स्त्री की आर्थिक स्थिती पूर्णतः बदल चुकी है जो लड़की कापीरेट क्षेत्र में रात भर लैपटाप पर काम कर रही है तो उस लड़की से अगर ससुराल वाले या पति आशा करे कि वो सुबह उठकर चाय बनाकर पिलाए तो ये किसी भी तरह संभव नही है और यहीं से तनाव ,मनमुटाव शुरू। दूसरी तरफ हमारे समाज का दोहरा चरित्र जो बेटी और बहू में भेदभाव करता है। इसीलिए कहते हैं कि न तो सास मां बन सकती है और न बहू बेटी,मै इसमें एक वाक्य और जोड़ना चाहती हूं कि दामाद भी कौनसा बेटा बन जाता है ?

हमारे देश की "विवाह संस्था"इतनी विश्वसनीय है कि विदेशी लोग आश्चर्य व्यक्त करते हैं-कैसे दो लोग एक साथ पचास-साठ वर्ष रह लेते हैं और सात जन्म तक निभाने की बात करते हैं ? लेकिन अब इस पवित्र संस्था में दरार आ रही है इसके लिए पूरे समाज को प्रयास करने होंगें तो कुछ सुधार हो सकता है।

सेक्टर ५ निवासी गृहिणी अनीता पांडे कहते हैं-"विवाह टूटने का मुख्य कारण है जीवन साथी, मेट्रो मेमोनियल, शादी डॉट कॉम इत्यादि वेबसाइट इनमें रिश्ते दूर दूर के रहते हैं हकीकत पता नहीं रहता है । रिश्ते करते वक्त पता नहीं रहता है। सब अच्छा दिखता है। इन सभी डॉट कॉम को बंद कर देना चाहिए।

पहले जमाने में रिश्ते तय करते थे माँ बाप तो परिवार, समाज का एक डर रहता था कि रिश्ते आसानी से टूटते नहीं थे।अब वह डर (या सम्मान) व दबाव नहीं रहा। आजकल के बच्चे इसलिए शादी से डरने लगे हैं कि अच्छा जीवन साथी नहीं मिला तो जीवन बर्बाद हो जाएगा इसलिए शादी करना ही नहीं चाहते। विवाह एक पवित्र बंधन है पर आजकल विवाह एक डर का विषय बन गया है मेरी नजर में विवाह तभी चल सकता है जब दोनों परिवार की सोच अच्छी व समझदार हो।

उज्जैन निवासी अर्चना सिंह कहती है-"आज के परिप्रेक्ष्य में बेहद जरुरी और ज्वलंत समस्या है ये कि आज के बच्चे विवाह से भाग रहे हैं, या वो इसे निभा नहीं पा रहे, इसका क्या कारण हो सकता है।

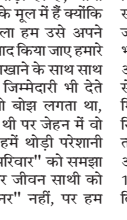

सबकी अपनी अपनी धारणाएं और मत हो सकता है ।मेरे ख्याल से इसके मूल में बस एक कदम पीछे की पीढ़ी ही है, यानी हमलोग, जी हां हम इसके मूल में हैं क्योंकि जो हमें विरासत में मिला हम उसे अपने बच्चों को दे नहीं पाएं। याद किया जाए हमारे माता पिता हमें पढ़ाने लिखाने के साथ साथ पारिवारिक मूल्य और जिम्मेदारी भी देते आयें, भले तब हमें वो बोझ लगता था, फालतू की बातें लगती थी पर जेहन में वो रची बसी रही जिससे हमें थोड़ी परेशानी तकलीफ भी हुई पर "परिवार" को समझा और संभाला, विशेषकर जीवन साथी को हमसफर माना, "पार्टनर" नहीं, पर हम अपने में खुद इतने व्यस्त हो गए कि अपने बच्चों को सिर्फ "अपने"तक ही सीमित कर दिया। जब हमलोग छोटे थे तो घर में आने वाले रिश्तेदार और दोस्त संबंधी हुआ करते थे, हमें यही बताया जाता था,"ये चचेरे भाई हैं, ये छोटी फुआ के बेटे, ये ममेरी बहन के लड़के, ये छोटी दादी, ये मंझली नानी, ये बड़का बाबा यानी सबसे दूर पास जो हो रिश्ता था, पर हम जब अपनी गृहस्थी बसाये तो अपने घर आने वाले लोगों का परिचय कैसे करवाए अपने बच्चों का उनसे

"ये गेस्ट हैं...

ये गेस्ट उनके खुद के दादा दादी भी हो जाते थे, नाना नानी भी, फिर उनसे ये उम्मीद करना कि वे जुड़े, गलत था। चचेरे, फुफेरे, ममेरे सब "कजीन " " तुम इन सब में मत पड़ो, अपनी पढ़ाई करो, तुम्हें कुछ बनना है, हम जो गलती किए परिवार निभा के क्या मिला? आपस में बच्चों के सामने बहसबाजी, एक दूसरे पर दोषारोपण, "तुम्हारे कारण मैं ये नहीं कर पाई, तुम्हारे कारण, मैं वो नहीं कर पाया... हमने बच्चों को प्राइवेसी दी परिवार नहीं

ये गलती रही हमारी, हमने उन्हें आसमान दिया, जमीन से उठा दिया, उन्हें रिश्तों की गरिमा नहीं दिखलाई, ये नहीं बताया कि आपस में लड़ने के बाद भी हम पति पत्नी एक दूसरे से बेहद प्यार करते हैं, परवाह करते हैं ये दिखलाया ही नहीं। बस उन्हें पलायन करना सिखा दिया, ये हमारी जिम्मेदारी बनती थी कि उन्हें बताते कि शादी सिर्फ समझौता नहीं, प्यार का समर होता है, धार्मिक बंधन होता है, सिर्फ रिवाज नहीं सात जन्मों का साथ होता है, हां ये शब्द उन्हें बताना चाहिए।

बच्चे किसी भी युग के हों वो खुद के लिए ही जीना चाहते हैं पर समाज को समझने और उन्हें सही दिशा में ले जाने की जरूरत उन्हें ही पूरी करनी है ये पिछली पीढ़ी को ही बतानी पड़ती है। बस यही सुधारना है समझना है,"बराबर नहीं साथ होना चाहिए।

क्या आप जानते हैं ?

भारत का पहला कानूनी तलाक 1888 में हुआ था, जो रुखमाबाई राउत और उनके पति दादाजी भिकाजी के बीच हुआ था। रुखमाबाई भारत की पहली महिला डॉक्टर और एक जानी-मानी सामाजिक कार्यकर्ता थीं ।उनका विवाह 11 साल की उम्र में कर दिया गया था, लेकिन उन्होंने उस रिश्ते को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और इस जबरन विवाह से बाहर आने के लिए ब्रिटिश भारत में एक लंबी कानूनी लड़ाई लड़ी। आखिरकार महारानी विक्टोरिया के हस्तक्षेप से यह विवाह भंग हुआ और उन्हें तलाक मिला ।इसके अलावा,आधुनिक भारतीय सिनेमा में कानूनी तौर पर पहला रजिस्टर्ड तलाक बॉलीवुड अभिनेता और निर्देशक आई. एस. जौहर का माना जाता है, जिन्होंने 1949 में अपनी पत्नी रामा बाइ से तलाक लिया था।

क्यों बढ़ रहे हैं तलाक और क्यों भाग रहे हैं बच्चे शादी से?

संपादकीय

सीएम, मंत्रियों को आम आदमी के बीच घूमना चाहिए

हर प्रदेश में किसी न किसी राजनीतिक दल की सरकार होती है। सरकार में सीएम से लेकर मंत्री तक होते हैं। सबके अपने परंपरागत सच्चाई जानने के तरीके होते हैं।कहीं अधिकारियों के जरिए लोगों की तकलीफ को जानने का प्रयास किया जाता है और तकलीफ दूर की जाती है।कहीं सीएम कुछ महीनों मे लोगों से मिलते हैं और उनकी समस्याओं को जानकर दूर करने का प्रयास करते हैं, कहीं शिविर लगाए जाते हैं और विभागों के अधिकारी लोगों की समस्या,तकलीफ दूर करते हैं, मांगें पूरी करते हैं। कहीं एक माह तक शिविरों का आयोजन गांवों में लोगों की समस्याओं को जानने व दूर करने का प्रयास किया जाता है। इससे लोगों की समस्याओं का पता चलता है,योजनाओं का लाभ मिल रहा है या नहीं मिल रहा है,पता चलता है। किसी क्षेत्र में जनता क्या सुधार चाहती है पता चलता है। डिजिटल युग में तो पीएम से लेकर सीएम तक का अपना एप है,अपनी हेल्पलाइन जहां लोग अपनी शिकायत करते हैं और उनकी शिकायतों पर कार्रवाई भी होती है।

सीएम जब सीएम के रूप में लोगों के बीच जाते हैं,मंत्री जब मंत्री के बीच लोगों के बीच जाते हैं तो लोग उनको समस्याएं बताते हैं लेकिन बहुत सारी समस्याएं नहीं बताते हैं,यह वह समस्याएं होती हैं,वह तकलीफ होती है, वह परेशानी होती है जो छोटी होती है जो लोगों को रोज होती है। इनका पता तो सीएम व मंत्री को तब ही लग सकता है जब वह लोगों के बीच आम आदमी की तरह घूमे।आम आदमी की तरह किसी बस में सफर करे, किसी आटो में सफर करे। जैसे कर्नाटक के परिवहन मंत्री बैरत सुरेश ने किया।वह आम लोगों के भेष में बेंगलुरू महानगर परिवहन निगम की सेवाओं को जानने को निकले। दो घंटे में दस से अधिक बसों में सफर किया। इस दौरान उनको वही परेशानियां झेलनी पड़ी जो आम लोगों को रोज झेलनी पड़ती है। कहीं उनको कंडक्टर ने चिल्हर न होने पर उतरने को कह दिया तो उतर गए।कहीं आटोचालक ने मीटर से ज्यादा किराया मांगा तो दिया। उन्होंने बस में बैठे बैठे देखा कि एक बस चालक ने तो बस स्टाप पर बस नहीं रोकी। एक बस स्टाप में खड़े यात्री बस को रुकने का इशारा किया तो बस नहीं रोकी गई।

मंत्री ने शाम 7 बजे से 9 बजे तक दो घंटे में बसों में यात्रा की,इस दौरान उन्होंने अपने मंत्री होने की पहचान को छिपाए रखा, न यात्रियों को पता चला न बस के कर्मचारियों को पता चला.किसी को पता नहीं चला कि उनके साथ राज्य का परिवहन मंत्री सफर कर रहा है। एक बस में उन्होंने टिकट के लिए सौ रुपए दिए,कंडक्टर ने छुट्टे पैसे मांगे,मंत्री ने कहा कि मेरे पास छुट्टे पैसे नहीं है तो कंडक्टर ने भी अपने बैग को दिखाते हुए कहा कि मेरे पास भी नहीं है,साथ ही यह भी कहा कि बस किराया के लिए छुट्टा पैसा नहीं है तो आप बस से उतर जाइए। मंत्री चाहते तो यहां पर दूसरे मंत्रियों की तरह एक मंत्री का अपमान कर रहे हो कह अपनी पहचान जरूर बताते। लेकिन वह आम लोगों की तरह बस से उतर गए। बाद जिस बस के चालक,कंडक्टर ने जो भी गलत किया था,अधिकारियों को कहकर सबके खिलाफ कार्रवाई की गई। उनको यह भी बताया गया कि यह कार्रवाई उनके खिलाफ क्यों की गई है। ताकि वह सचेत रहे कि उनके बस में कभी मंत्री भी सफर कर सकता है और बुरा व्यवहार करने पर उनके खिलाफ कार्रवाई भी हो सकती है।

इसी तरह तमिलनाडु में एक मंत्री वही काम किया जो कई राज्यों में मंत्री,अधिकारी करते हैं और राज्य के सीएम विजय ने जो किया वह भी राज्य के सीएम लोगों को करना चाहिए। यानी मंत्री यदि गलत करते हैं तो उनको सीएम को एहसास दिलाया जाना चाहिए कि आपने गलत किया है और ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि कोई मंत्री फिर से वैसी गलती न करे।तमिलनाडु में उद्योग मंत्री एम कीतर्ना विरुधुनगर के एक स्कूल का निरीक्षण करने पहुंचे।उन्होंने एक छात्रा से अंग्रेजी में सवाल पूछा,छात्रा जवाब नहीं दे पाई तो मंत्री ने उनको डांटा। इस घटना का वीडियो वायरल हुआ तो मानवाधिकार कार्यकर्ताओं सहित लोगों ने मंत्री की आलोचना की । मंत्री ने अंग्रेजी में जवाब न देने के लिए छात्रा को डांट दिया, उन्होंने माना यह छात्रा की गलती है, हकीकत में इसके लिए तो स्कूल के प्रिंसिपल व शिक्षकों को डांट पड़नी थी कि वह कैसी पढ़ाई कराते हैं कि छात्रा अंग्रेजी में जवाब नहीं दे सकती। अक्सर ऐसा होता है कि अधिकारी व मंत्री कहीं भी निरीक्षण करने जाते हैं और किसी न किसी को डांटते हैं,फटकार लगाते हैं। वह जानने का प्रयास नहीं करते हैं ऐसा है तो क्यों है, और इसके लिए दोषी कौन है।जरूरी नहीं है कि जो सामने हैं,वही दोषी हो।

इसके बाद तमिलनाडु के सीएम विजय ने जो किया वह दूसरे राज्यों के सीएम के लिए एक उदाहरण है कि अगर आपके मंत्री ने कोई गलती की है तो उसका पक्ष मत लीजिए क्योंकि पक्ष लेने पर वह मंत्री फिर से वही गलती कर सकता है, अपने मंत्री होने की धौंस फिर किसी छात्रा,आम नागरिक, किसी अधिकारी को दिखा सकता है। हर राज्य के मंत्री अपने मंत्री होने का रौब तो दिखाते ही है।तमिलनाडु में फिर कोई मंत्री का सत्तारूढ़ दल का कोई नेता या कार्यकर्ता किसी स्कूल में ऐसा न कर सके इसलिए तमिलनाडु के सीएम ने स्कूलों में राजनीतिक कार्यक्रमों, पार्टी के नेताओं व कार्यकर्ताओं के प्रवेश पर रोक लगा दी है। राज्य में एक सर्कुलर जारी कर साफ कर दिया गया है कि स्कूलों में अब सिर्फ शैक्षणिक गतिविधियां होंगी।दो राज्यों के दो उदाहरण हैं कि कभी कभी सीएम व मंत्री को ऐसा काम भी करना चाहिए ताकि वह एक मिसाल कायम कर सकें।

प्रधानमंत्री मोदी के भारत के 5 एफ विजन को बुनता टेक्स 2026

पवित्रा मार्गेरिटा

कश्मीरी पश्मीना की नरम गर्माहट से लेकर असम के मूंगा सिल्क की शानदार चमक तक, राजस्थानी बांधनी के जीवंत ज्यामितीय पैटर्न से लेकर कांजीवरम सिल्क की सदाबहार और बेहतरीन बनावट तक, भारत की भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता धागों से बुना एक जीता-जागता नक्शा है। आज, सभ्यता की यह बेमिसाल तस्वीर एक ही छत के नीचे एक साथ नजर आ रही है। नई दिल्ली के प्रसिद्ध भारत मंडपम में 14 से 17 जुलाई तक भारत टेक्स 2026 का आयोजन, हमारे देश की खूबसूरत विविधता को एक ही मंच पर ला रहा है।

वस्त्र उद्योग सिर्फ हमारी विरासत की झलक नहीं है, यह भारत के मैक्रो-इकोनॉमिक ढांचे की एक मजबूत नींव भी है। यह क्षेत्र लगातार विकास और समानता का एक बहुत बड़ा इंजन बना हुआ है, जो जीडीपी में 2.3%, औद्योगिक उत्पादन में 13% और निर्यात में 8.6% का योगदान देता है। कृषि के बाद भारत में सबसे ज़्यादा रोजगार देने वाला यह क्षेत्र 100 मिलियनसे ज़्यादा लोगों की आजीविका का साधन है, जो ग्रामीण समुदायों को मजबूत बनाता है और देश भर में लाखों महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाता है।

आर्थिक शक्ति के इस केंद्र को सही मायने में समझने के लिए भारत टेक्सका अनुभव करना बेहद जरूरी है। यह वैश्विक स्तर पर प्रमुख भारतीय वस्त्रों का व्यापार मेला है, जिसे पूरी दुनिया के सामने हमारे निर्माण और रचनात्मकता की क्षमता का दबदबा दिखाने के लिए तैयार किया गया है। यह एक ऐसा व्यापक बाजार है, जहाँ घरेलू निर्माणकर्ता, राज्यों के पवेलियन, अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शक और वैश्विक खरीदार एक ही छत के नीचे होते हैं। इससे बड़े पैमाने पर सोर्सिंग, कॉर्पोरेट जुड़ाव और ब्रांड को प्रदर्शित करने के अवसर भी मिलते हैं।

इस शानदार पहल के सफर पर नजर डालें तो मुझे भारत टेक्सके पिछले दो आयोजनों से बेहद गर्व की अनुभूति का स्मरण होता है। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत टेक्सके पिछले संस्करण के दौरान संपूर्ण वस्त्र समुदाय को संबोधित किया था, तो उन्होंने बेहद खूबसूरती से कहा था कि हमने जो बीज बोया था, वह अब तेजी से बरगद के पेड़ का रूप ले रहा है। उन्होंने कहा कि यह भव्य आयोजन न केवल हमारी समृद्ध परंपराओं का जश्न मनाता है, बल्कि एक विकसित भारत की अपार संभावनाओं को भी उजागर करता है। पहले दो आयोजनों की जबरदस्त सफलता ने एक मजबूत नींव रखी, बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय खरीदारों को आकर्षित किया और सहयोग की दिशा में भी तेजी देखने को मिली। भारत टेक्स 2025 के दौरान मेरे व्यक्तिगत अनुभव ने भविष्य के लिए एक बहुत ही सकारात्मक नजरिया हासिल किया, जहाँ मैंने सरकार से सरकार और व्यापार से सरकार के बीच गहन बातचीत को ठोस नतीजों में बदलते देखा और इसी के चलते भारत की कार्य क्षमता में बढ़ते वैश्विक भरोसे की झलक भी दिखी। यह तीसरा आयोजन उस रफ्तार को और आगे ले जाता हैऔर शुरुआती संभावनाओं को पूरी तरह से औद्योगिक प्रभाव में बदलता है।

इस साल के कार्यक्रम का बहुत बड़ा पैमाना एक सोची-समझी औद्योगिक रणनीति को दर्शाता है। भारत मंडपम में खास प्रदर्शनी हॉलों में फैली यह प्रदर्शनी भारत की पूरी वस्त्र मूल्य श्रृंखला को दिखाती है, जिसमें फाइबर, यार्न, फैब्रिक, कपड़े और फैशन, होम टेक्सटाइल, तकनीकीवस्त्र और सहायक उद्योग शामिल हैं। इसमें 1,600 से ज़्यादा प्रदर्शक हिस्सा ले रहे हैं, जो स्थानीय उत्पादन की ताकत को सीधे वैश्विक मंच पर पेश करेंगे। यह प्रधानमंत्री मोदी के क्रांतिकारी 5एफविजन- फार्म (खेत) से फाइबर से फैक्ट्री से फैशन से फॉरेन (विदेश) तक के सफरको दर्शाता है। पूरी मूल्य श्रृंखला को एक ही औद्योगिक श्रृंखला में जोड़कर, यह कार्यक्रम विनिर्माण के हर चरण को देश में ही संभालने की भारत की आत्मनिर्भर क्षमता को दिखाता है।

इस पहल को दुनिया भर से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली है। इस संस्करण में अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जापान, पुतर्गाल, स्पेन, न्यूजीलैंड, दक्षिण कोरिया, दक्षिण अफ्रीका और नेपाल समेत 14 देशों के अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शक शामिल हैं, साथ ही, संयुक्त राष्ट्र और यूरोपीय संघ का भी मजबूत संस्थागत प्रतिनिधित्व है। कई देशों के मंत्री-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल और बड़े व्यापारिक प्रतिनिधि दीघर्कालीन साझेदारी की संभावना तलाशने के लिए इसमें हिस्सा ले रहे हैं। उम्मीद है कि चार दिनों में 110 से ज़्यादा पंजीकृत देशों से 7,000 से ज़्यादा खरीददार और 1.3 लाख व्यापारिक आगंतुक आएंगे, जो वहां दिखाए जा रहे 20,000 से ज़्यादा वस्त्र उत्पादों को देखेंगे। इस व्यावसायिक गतिविधि में 3,500 से ज़्यादा खास तौर पर आयोजित बिजनेस टू बिजनेस बैठकें होंगी। इसके अलावा, राज्य निवेशक संपर्क सत्रभी होंगे, जो अलग-अलग भारतीय राज्यों को अपने खास औद्योगिक ढ़ांचे को पेश करने का मंच प्रदान करेंगे।

उद्योगों को आगे बढ़ाने हेतु वास्तविक नेतृत्व के लिए ज्ञान और भविष्य की योजना के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की जरूरत होती है। भारत टेक्स 2026 इस ज़िम्मेदारी को वैश्विक वस्त्र वार्ता के जरिए निभाता है, जिसमें पैनल चर्चा, राउंडटेबल, मास्टरक्लास, राज्य सत्र, अवॉर्ड्स पिच फेस्ट और कायर्शाला जैसे 100 से ज़्यादा खास सत्र शामिल हैं। 370 से ज़्यादा अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय सीएक्सओ, पॉलिसी निर्माता और अन्वेषकों की अगुवाई में होने वाले ये खास सत्र व्यापार और निवेश को बढ़ाने, तकनीक और नवाचारों को आगे बढ़ाने और फैशन तथा क्राफ्ट को बेहतर बनाने पर फोकस करेंगे। इस कार्यक्रम में व्यापार, निवेशक, तकनीक और संस्थागत सहयोग से जुड़े कई रणनीतिक समझौतों और क्षेत्रों से जुड़ी रिपोर्ट पर हस्ताक्षर और उन्हें लॉन्च भी किया जाएगा।

इन चर्चाओं में वहनीयता और सर्कुलैरिटी जैसे अहम पहलुओं पर भी खास ध्यान दिया जाएगा। पिछले कार्यक्रम के दौरान, प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया था कि वैश्विक फैशन समुदाय तेजी से पर्यावरण के लिए फैशनके दृष्टिकोण को अपना रहा है और वहनीयता हमेशा से भारत की टेक्सटाइल विरासत का अहम हिस्सा रही है। भारत टेक्सका यह संस्करण वैश्विक पर्यावरण से जुड़ी चुनौतियों को एक बड़े अवसर में बदलता है और यह दिखाता है कि कैसे नवाचारों की मदद से हमारी पारंपरिक तकनीकें और बेहतर हुई हैं और इस दौरान ये भी ख्याल रखा गया है कि इस प्रक्रिया में संसाधनों का ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल हो सके और बर्बादी कम हो, जिससे हमारे बुनकरों और कारीगरों को सीधा फायदा हो। हमारे वस्त्र मंत्री श्री गिरिराज सिंह जी के नेतृत्व में, मंत्रालय ने जमीनी स्तर पर इन आधुनिकीकरण और वहनीय वृद्धि की पहलों को तेजी से आगे बढ़ाया है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि हमारी पूरी वस्त्र मूल्य श्रृंखला को मजबूत आधुनिक तकनीक, बड़े पैमाने पर लागू होने वाले नीतिगत फ्रेमवर्क और मजबूत मार्केट लिंकेज का सहारा मिले।

आज भारत टेक्समेंलगातार बढ़ता पैमाना और आत्मविश्वास जो दिख रहा है, वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले एक दशक से लगातार किए जा रहे नीतिगत सुधारों का नतीजा है। पिछले 12 सालों में, मोदी सरकार ने बड़े बदलाव लाने वाले कदमों के जरिए वस्त्र मूल्य श्रृंखलाओं की हर कड़ी को मजबूत किया है। वस्त्रों के लिएप्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) योजना ने ?31,687 करोड़ से ज़्यादा के निवेश का वादा हासिल किया है। इससे मैन-मेड फाइबर वाले कपड़ों, फैब्रिक और टेक्निकल टेक्सटाइल के बड़े पैमाने पर निर्माण को बढ़ावा मिला है और साथ ही बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर भी पैदा हुए हैं। इसके साथ ही, प्रधानमंत्री के दूरदर्शी 5एफदृष्टिकोण को अपनाते हुए सात पीएम पार्क को एकीकृत विनिर्माण व्यवस्था के तौर पर विकसित किया जा रहा है। जमीनी स्तर पर लोगों को सशक्त बनाने का काम भी तेजी से चल रहा है, राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम के तहत 794 हैंडलूम क्लस्टर में लगभग ?2,000 करोड़ का निवेश किया गया है। इससे 1.17 लाख बुनकरों को बेहतर करघेमिले हैं और लगभग 90,000 कामगारों को कौशल प्रशिक्षण दिया गया है। वहीं, राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रमके तहत हस्तशिल्प क्षेत्र में ?1,335 करोड़ से ज़्यादा का निवेश किया गया है। इसके अलावा, 1.5 लाख से ज़्यादा बुनकरों को गवनर्मेंट ई-मार्केटप्लेस (जेम) से जोड़ा गया है और बुनकर मुद्रा योजनाके तहत लगभग 3 लाख लोगों को बिना गारंटी के ऋण दिए गए हैं। अपने घरेलू निर्माताओं, कारीगरों और अन्वेषकों को सीधे वैश्विक बाजार से जोड़कर, इन व्यापक सुधारों ने हमें उस बड़े वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ने के लिए तैयार किया है, जिसकी झलक इस हफ्ते देखने को मिल रही है।

आज जब हम भारत मंडपम के जीवंत प्रदर्शनी हॉलों पर नजर डालते हैं, तो हमारा नजरिया इस व्यापार प्रदर्शनी के तात्कालिक दायरे से कहीं आगे तक विस्तृत होता नजर आता है। यह आयोजन भारत के वस्त्र उद्योग को 350 बिलियन डॉलर के वैश्विक शक्ति केंद्र में बदलने के हमारे विजन 2030 रोडमैप में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो विकसित भारत @ 2047 के राष्ट्रीय लक्ष्य के साथ पूरी तरह से मेल खाता है। मैं आप सभी को भारत टेक्स 2026 में अगले चार दिनों तक हमारे साथ जुड़ने के लिए आमंत्रित करता हूं, ताकि आप हमारे श्रमिकों की अविश्वसनीय शक्ति, हमारे रचनाकारों के शानदार नवाचारों और वैश्विक वस्त्रों के भविष्य को देख सकें, जिन्हें गर्व से भारत में डिजाइन किया गया है, टिकाऊ तरीके से निर्मित किया गया है और बड़े पैमाने पर एकीकृत किया गया है।

लॉड्र्स में लिखा भारतीय महिला क्रिकेट का स्वर्णिम इतिहास

आरके जैन

क्रिकेट की दुनिया में यदि किसी मैदान को खेल का तीर्थ कहा जाए, तो वह लॉड्र्स है। यहां जीत केवल उपलब्धि नहीं, बल्कि सर्वोच्च गौरव का प्रतीक मानी जाती है। इसी ऐतिहासिक धरती पर भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने ऐसा स्वर्णिम इतिहास रचा, जिसने केवल रिकॉर्ड नहीं बदले, बल्कि विश्व क्रिकेट की सोच को भी नई दिशा दी। इंग्लैंड जैसी सशक्त टीम को 270 रनों के विशाल अंतर से पराजित कर भारतीय शेरनियों ने साबित कर दिया कि महिला क्रिकेट अब संभावनाओं का नहीं, उत्कृष्टता का पर्याय बन चुका है। यह जीत महज एक टेस्ट मुकाबले की सफलता नहीं, बल्कि वर्षों के संघर्ष, अथक परिश्रम, अटूट विश्वास और निरंतर साधना का प्रतिफल है। इस ऐतिहासिक क्षण ने करोड़ों भारतीयों के हृदय को गर्व से भर दिया और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अमिट अध्याय लिख दिया।

शुरुआत से ही भारतीय टीम ने मैच पर अपना वर्चस्व स्थापित कर दिया था। गेंदबाजों ने इंग्लैंड की मजबूत बल्लेबाजी को खुलकर खेलने का अवसर नहीं दिया। खासकर भारतीय स्पिन आक्रमण ने अपनी सटीकता और विविधता से मेजबान बल्लेबाजों को पूरी तरह जकड़ लिया। हर विकेट के साथ भारत का आत्मविश्वास बढ़ता गया और इंग्लैंड का प्रतिरोध कमजोर पड़ता गया। बल्लेबाजी में स्मृति मंधाना की उपयोगी पारी और यस्तिका भाटिया के शानदार शतक (113) ने मजबूत आधार तैयार किया, जबकि मध्यक्रम की महत्वपूर्ण साझेदारियों (ऋचा घोष की नाबाद 50 रन की पारी सहित) ने बढ़त को निर्णायक बना दिया। बल्लेबाजों ने संयम और आक्रामकता का संतुलन दिखाया, वहीं गेंदबाजों ने अनुशासित प्रदर्शन से साबित कर दिया कि भारतीय महिला टीम अब हर विभाग में परिपक्व संतुलित और किसी भी चुनौती के लिए पूरी तरह तैयार है।

जीत को इतिहास में बदलने का क्षण चौथे दिन आया। भारतीय गेंदबाजों ने इंग्लैंड की दूसरी पारी को मात्र 186 रनों पर समेटकर 270 रनों की ऐतिहासिक विजय पर मुहर लगा दी। यह सफलता किसी एक खिलाड़ी की नहीं, बल्कि सामूहिक समर्पण, सटीक रणनीति और अनुशासित खेल की जीत थी। हर खिलाड़ी ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई, जो टीम की सबसे बड़ी ताकत बनकर उभरी। कप्तान की सूझबूझ, गेंदबाजों का प्रभावी उपयोग, सटीक क्षेत्ररक्षण और शानदार तालमेल ने इंग्लैंड को पूरे मैच में दबाव में रखा। मानसिक दृढ़ता और तकनीकी श्रेष्ठता के बल पर भारतीय टीम हर मोर्चे पर मेजबानों पर भारी रही। इस प्रदर्शन ने साबित कर दिया कि भारतीय महिला टीम अब दुनिया की किसी भी मजबूत टीम को उसकी सरजमीं पर हराने का दम रखती है। टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने वाली क्रांति गौड़ के 5/37 (पहली पारी) और स्नेह राणा के 4 विकेट (दूसरी पारी) ने इंग्लैंड को चित किया।

इस जीत का सबसे गौरवपूर्ण पक्ष यह रहा कि भारतीय महिला टीम ने पहली बार लॉड्र्स के ऐतिहासिक मैदान पर टेस्ट जीत का परचम लहराया। भारतीय पुरुष टीम इस मैदान पर कई यादगार सफलताएं हासिल कर चुकी है, लेकिन अब भारतीय शेरनियों ने भी अपने प्रदर्शन से यहां अमिट पहचान बना ली। यह केवल एक रिकॉर्ड नहीं, बल्कि वर्षों के संघर्ष, मेहनत और अर्जित आत्मविश्वास की सशक्त अभिव्यक्ति है। इंग्लैंड की सरजमीं पर मेजबान टीम को इस अंदाज में हराना बताता है कि भारतीय महिला क्रिकेट अब विदेशी परिस्थितियों में भी उतना ही मजबूत और निडर है। इस विजय ने विश्व क्रिकेट को स्पष्ट संदेश दिया कि भारत की महिला टीम अब केवल चुनौती स्वीकार नहीं करती, बल्कि नए मानक गढ़ने के इरादे से मैदान में उतरती है।

भारतीय महिला क्रिकेट की यह उपलब्धि उन संघर्षपूर्ण दिनों की याद भी दिलाती है, जब सीमित संसाधनों, कम अवसरों और उपेक्षा के बीच खिलाड़ियों ने अपने हौसले को जीवित रखा। आज वही संघर्ष विश्व मंच पर सम्मान बनकर चमक रहा है। स्मृति मंधाना, हरमनप्रीत कौर और यस्तिका भाटिया जैसी खिलाड़ियों ने केवल व्यक्तिगत उपलब्धियां ही नहीं, बल्कि टीम भावना से सामूहिक सफलता की नई मिसाल भी कायम की। आपसी विश्वास और एकजुटता ने हर चुनौती को अवसर में बदल दिया। यह जीत उन हजारों बेटियों के लिए प्रेरणा है, जो छोटे शहरों, गांवों और साधारण मैदानों से भारत की जर्सी पहनने का सपना देखती हैं। भारतीय शेरनियों ने सिद्ध कर दिया कि प्रतिभा, परिश्रम और अटूट संकल्प के सामने कोई बाधा टिक नहीं सकती।

इस ऐतिहासिक सफलता का श्रेय केवल खिलाड़ियों को नहीं जाता। भारतीय क्रिकेट बोर्ड द्वारा महिला क्रिकेट को बेहतर सुविधाएं, प्रतियोगिताएं और प्रशिक्षण उपलब्ध कराने की पहल ने इस बदलाव की मजबूत नींव रखी है। खेलों को बढ़ावा देने वाली सरकारी नीतियों ने भी खिलाड़ियों का आत्मविश्वास बढ़ाया है, जिसके सकारात्मक परिणाम अब अंतरराष्ट्रीय मंच पर दिखाई दे रहे हैं। फिर भी यह मंजिल नहीं, बल्कि नई शुरुआत है। आगे विश्व कप, एशिया कप और द्विपक्षीय श्रृंखलाओं जैसी कठिन परीक्षाएं इंतजार कर रही हैं। इसलिए इस जीत को निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन में बदलना ही सबसे बड़ी चुनौती होगी। यदि यही समर्पण, अनुशासन और टीम भावना कायम रही, तो भारतीय महिला क्रिकेट विश्व की अग्रणी ताकत बनने से कोई नहीं रोक सकेगा।

लॉड्र्स की यह जीत भारतीय खेल जगत का ऐसा स्वर्णिम अध्याय है, जिसे समय कभी धूमिल नहीं कर सकेगा। जब भी कोई युवा खिलाड़ी कठिनाइयों से निराश होगा, यह मुकाबला उसे साहस, धैर्य और आत्मविश्वास की नई प्रेरणा देगा। भारतीय शेरनियों ने साबित कर दिया कि प्रतिभा का मूल्य अवसर से तय होता है, लिंग से नहीं। यह केवल क्रिकेट की जीत नहीं, बल्कि समान अवसर, महिला सशक्तिकरण और बड़े सपनों की बुलंद उड़ान का प्रतीक है। इंग्लैंड पर 270 रनों की यह प्रचंड विजय वर्षों तक भारतीय क्रिकेट की प्रेरक पहचान बनी रहेगी। लॉड्र्स से गूंजी यह गाथा दुनिया को बता गई कि भारतीय महिला क्रिकेट अब इतिहास का हिस्सा भर नहीं, बल्कि नया इतिहास गढ़ने वाली ताकत बन चुका है।

खाने में मिलावट की समस्या से लड़ता भारत

विवेक शुक्ला

खाने के सामान में मिलावट आज देश की एक बड़ी समस्या बन चुकी है। ये सिर्फ पैसे बचाने की लालच नहीं, बल्कि लाखों लोगों की सेहत से खिलवाड़ है। इस समस्या की जड़ें काफी गहरी हैं। पर अब सरकार और कुछ सरकारी संस्थानों के वैज्ञानिक खानपान में मिलावट करने वालों के खिलाफ अपने स्तर पर रिसर्च कर रहे है। इसलिए लगता है कि हालत सुधरेगी।

जरा कल्पना करो कि सुबह आप चाय में दूध डालते हो, लेकिन वो दूध पानी और कुछ केमिकल से मिला हुआ है। या फिर सब्जी मार्केट से लाई मिर्च पाउडर में सिंथेटिक कलर मिला है। अफसोस कि ये भारत में रोजमर्रा की हकीकत है। खाने के सामान में मिलावट आज देश की एक बड़ी समस्या बन चुकी है। ये सिर्फ पैसे बचाने की लालच नहीं, बल्कि लाखों लोगों की सेहत से खिलवाड़ है।

भारत में खाने की मिलावट की जड़ें काफी गहरी हैं। एफएसएसएआई (खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण, भारत) के आंकड़ों के मुताबिक, वित्तीय वर्ष 2026 में टेस्ट किए गए हर छह खाद्य नमूनों में से एक फेल हो गया। मतलब करीब 16-17 फीसदसैंपल स्टैंडर्ड पर खरे नहीं उतरे। दूध, घी, मसाले, पनीर, तेल, चाय पाउडर- ये सब आम टारगेट हैं।

महाराष्ट्र में हाल ही में एफडीए की रेड के दौरान ट्रक वाले दूध फेंकने लगे, क्योंकि उन्हें डर था कि मिलावटी पकड़ा जाएगा। शोलापुर में 37,000 लीटर से ज्यादा मिलावटी दूध जब्त और नष्ट किया गया। अब तक 359 गिरफ्तारियां, 235 एफआईआर और करोड़ों के सामान जब्त किए। दूध कलेक्शन 20-25% तक गिर गया, जो दिखाता है कि पहले कितना घोटाला चल रहा था।

दिल्ली-यूपी में पनीर की हालत और खराब है। 83 फीसद सैंपल फेल, 40 फीसद हानिकारक। पाम ऑयल, यूरिया और केमिकल मिलाकर बनाया जाता है फेक पनीर। मसालों में सिंथेटिक डाई, मछली में फॉर्मेलिन, घी में वनस्पति तेल आदि। लिस्ट लंबी है। ग्रामीण इलाकों से लेकर शहरों तक, छोटे दुकानदार से लेकर बड़े सप्लाई चेन तक ये फैला हुआ है। गरीब और मध्यम वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित होता है क्योंकि वे सस्ता सामान खरीदते हैं। दिल्ली में नवरात्रि के समय सैकड़ों लोग अस्पताल पहुंच गए मिलावटी आटा खाने से। पंजाब में घी और मिठाइयों की रेड में हजारों किलो सामान जब्त किया गया।

दुष्परिणाम क्या हैं?

खाने की मिलावट के नुकसान दो तरह के हैं। पहला- पेट दर्द, उल्टी, डायरिया, फूड पॉइजनिंग। लंबे समय में लीवर-किडनी डैमेज, कैंसर, हामीनल प्रॉब्लम, न्यूरोलॉजिकल जैसी समस्याओं से दो-चार होना पड़ सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, दुनियाभर में मिलावटी खाने की चीजों से 60 करोड़ों लोग बीमार हो रहे हैं या जान गंवा रहे हैं। भारत में ये आंकड़े और भयावह हैं। सिंथेटिक कलर वाली मिर्च से पेट की बीमारियां बढ़ रही हैं। डिटर्जेंट मिले दूध से बच्चों का शारीरिक विकास प्रभावित कर रहा है और हड्डियों को कमजोर कर रहा है। दूसरा, लंबे समय तक इस तरह के खाद्य पदार्थों के सेवन से डायबिटीज और दिल की बीमारियां बढ़ रही हैं।

सरकार की कोशिशें

पर अब सरकार लड़ने के मूड में है। एफएसएसएआई यानी खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण की तरफ से भारत नियमित सैंपलिंग, रेड, जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। ये भारत सरकार का वो मुख्य संगठन है जो पूरे देश में खाने-पीने की चीजों की सुरक्षा, गुणवत्ता और मानकों की देखभाल करता है। राज्यों में एफडीए, हेल्थ डिपाटमेंट रेड कर रहे हैं। पेनल्टी, जेल और खराब समान को नष्ट किया जा रहा है। स्कूलों में फूड सेफ्टी एजुकेशन के अभियान चलाए जा रहे हैं। लेकिन चुनौतियां हैं। संसाधन कम हैं, ग्रामीण इलाकों में पहुंच मुश्किल है। पर प्रयास हो रहे हैं।

उदाहरण के रूप में दिल्ली- हरियाणा सीमा पर भारत सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय का संस्थान है नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फूड टेक्नोलॉजी एंटरप्रेन्योरशिप एंड मैनेजमेंट (निफ्टेम)। यहां खाद्य अनुसंधान और विश्लेषण केंद्रों में खाने की मिलावट डिटेक्शन, खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता पर काम किया जा रहा हैं। इधर रैपिड टेस्टिंग किट्स, एडवांस्ड एनालिसिस टेक्निक्स, खाद्य सुरक्षा मानकों पर अनुसंधान किया जाता है। प्रख्यात वैज्ञानिक और निफ्टेम के निदेशक डॉ. हरिंदर सिंह ओबेरॉय कहते हैं कि हम थोड़ा कम, ईट राइट के विचार को आगे लेकर जा रहे हैं। हमारे वैज्ञानिकों की टीम उद्योगों के साथ मिलकर नई तकनीकें विकसित और साझा करती है। मतलब, नई मशीनें और तरीके फैक्टरियों तक पहुंचा दिए जाते हैं। इसके अलावा वैज्ञानिक कई रिसर्च करके उन्हें किताबों और जर्नल में छापते हैं। इससे दूसरे लोग भी सीख पाते हैं। निफ्टेम नियमित ट्रेनिंग प्रोग्राम चलाता है, जिसमें लोग खाने की सुरक्षा के बारे में सीखते हैं। सीएफआरए यानी खाद्य अनुसंधान और विश्लेषण केंद्र में आधुनिक टेस्टिंग मशीनें लगी हैं। इनकी मदद से मिलावट बहुत जल्दी पकड़ी जा सकती है। पहले जहां दिन-दो दिन लग जाते थे, अब कुछ घंटों या मिनटों में रिपोर्ट आ जाती है। फोर्टिफिकेशन यानी खाने में अच्छे पोषक तत्व मिलाने का काम भी जोरों पर है। इससे खाना ज्यादा पौष्टिक बनता है और सुरक्षित भी रहता है।

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस पर निफ्टेम खास कार्यक्रम आयोजित करता है। इनमें सड़क के ठेले वाले विक्रेताओं को ट्रेनिंग दी जाती है। उन्हें साफ-सफाई, सही तरीके से खाना रखने और मिलावट न करने की जानकारी दी जाती है। डॉ ओबरॉय कहते हैं कि हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से प्रेरणा पाते हैं। हमें भारत को एक इस तरह के देश के रूप में विकसित करना है, जहां खाने-पीने की वस्तुओं में कतई मिलावट ना हो। दरअसल खाने की मिलावट से निपटने के लिए , सस्ती और तेज टेस्ट किट्स बनाई जा रही हैं। इनसे गांव-शहर में कहीं भी आसानी से चेक किया जा सकता है। दूसरे, ये रिसर्च खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण भारत (एफएसएसएआई) को बेहतर नियम बनाने में मदद करते हैं। तीसरे, फैक्टरियों को साफ-सुथरी प्रोसेसिंग तकनीक दी जाती है, जिससे मिलावट करने की जरूरत ही कम पड़ती है।

चौथे, जागरूकता कार्यक्रमों और ट्रेनिंग से पूरा सप्लाई चेन मजबूत होता है। इससे किसान से लेकर दुकानदार तक सब सतर्क रहते हैं। पांचवें, लंबे समय में लोगों की बीमारियां कम होंगी, स्वास्थ्य पर खर्च घटेगा और भारत का खाना विदेशों में भी ज्यादा बिकेगा। उदाहरण के तौर पर, अगर निफ्टेम की तकनीक से मसाले या दूध की जांच सिर्फ 10 मिनट में हो जाए, तो अधिकारी तुरंत छापा मार सकेंगे। ठेले वाले विक्रेता ट्रेनिंग लेकर साफ-सुथरा और असली खाना बेचेंगे, जिससे ग्राहक भी खुश रहेंगे। खाने की मिलावट की समस्या भले ही गहरी हो, लेकिन हम हार नहीं मानेंगे। सरकार की कोशिशें, निफ्टेम जैसे संस्थानों का अनुसंधान और डॉ. हरिंदर सिंह ओबेरॉय जैसी मजबूत नेतृत्व मिलकर बड़ा बदलाव ला रहे हैं। सबको अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। खरीदते समय लेबल अच्छे से पढ़ें, एफएसएसएआई का लोगो देखें और अगर कुछ गड़बड़ लगे तो शिकायत जरूर करें। अगर हर स्तर पर ईमानदारी आए, तो स्वस्थ भारत का सपना सच हो सकता है। इस सपने को पूरा करने में निफ्टेम जैसे संस्थानों का अहम रोल होने वाला है। याद रखें, खाना सिर्फ पेट भरने के लिए नहीं, बल्कि सेहत बनाने के लिए होता है। आइए, मिलकर ईट राइट अभियान को आगे बढ़ाएं!

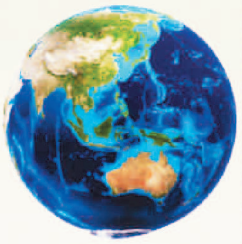

अगर पृथ्वी घूमती है तो हमें क्यों नहीं होती महसूस?

पृथ्वी का घूमना कोई अचानक हुई घटना नहीं है। इसके पीछे काफी सारे ऐसे कारण है जिन्हें हर कोई नहीं समझ पाता है। लेकिन आज हम आपको आसान भाषा में समझेंगे। दरअसल पृथ्वी अपने साथ कई बड़े राज लेकर बैठी होगी है। अगर आप भी विज्ञान में या फिर ऐसी चीजों में इंट्रेस्ट रखते हो तो आप हम आपको इसकी जानकारी देंगे। दरअसल जब हमारा गृह जिसे नीला ग्रह या पृथ्वी भी कहते है वो बन रहा था तब शुरुआती समय में पृथ्वी पर काफी सारी गैस थी, जो हवा में उठने लगी और उसके बाद यह सब गैस मिलकर एक निश्चित दिशा में घूमने लगी,फिर बाद में धीरे-धीरे वातावरण बनता गया और यह पूरी पृथ्वी ही एक ही दिशा में घूमने लगी जिस वजह से इतनी रफ्तार पैदा हुई थी, यह आज तक 1670 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से घूमती है।

इतनी तेज रफ्तार से घूमने के बावजूद भी हमें क्यों कुछ नहीं होता

इसके पीछे बड़ा ही वैज्ञानिक कारण है, क्योंकि जब हम किसी चलती हुई चीज पर सफर करते हैं, तो हम भी उसी रफ्तार से चल रहे होते हैं, जिसकी वजह से हमें सब कुछ एक संतुलित स्थिति में नजर आता है। यह ठीक वैसा ही है जैसा कि हम किसी तेज रफ्तार से चल रही ट्रेन में सफर करते हैं तो हमें तो सारी दुनिया पीछे जाती हुई नजर आती है लेकिन हम ट्रेन के साथ आगे बढ़ते रहते हैं यह भी कुछ वैसा ही है।

क्या होगा अगर पृथ्वी अचानक घूमना बंद कर दे

वहीं इसके अलावा अगर हमारी धरती अचानक से घूमना बंद कर दे तो इसके बाद जो होगा वह तो इंसानों की सोच समझ से ही परे होगा। यह किसी ने सोचा भी नहीं होगा इतना ज्यादा विनाशकारी होगा। सबसे पहले तो अचानक से धरती पर स्थित हर चीज पूर्व दिशा की ओर उछल जाएगी, क्योंकि हमारा गृह इसी दिशा में घूम रहा है और हम भी उसके साथ घूम रहे होते हैं इसके बाद तो जो होगा हम सोच भी नहीं सकते हैं, हर तरफ विनाश होगा, जीवन लगभग असंभव भी हो जाएगा, यही नहीं यहां तक की धरती पर जिस तरह से मौसम परिवर्तन होते हैं वह भी लगभग खत्म ही हो जाएंगे, जिस जगह पर रात होगी है उस जगह पर रात ही रहेगी और जहां दिन होगा उस समय वहां दिन ही रह जाएगा।

अनोखे शौक जो बन चुके हैं पहचान

कोई हर रोज खाता है पत्थर, तो कोई पानी में खेलता है हॉकी

हर इंसान का कोई न कोई शौक होता है। कुछ लोगों के शौक आम होते हैं, जैसे म्यूजिक सुनना, ट्रैवल करना या किताबें पढ़ना। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने शौक को इस हद तक लेकर जाते हैं कि वो लोगों के लिए कौतूहल का विषय बन जाते हैं। क्या आपने कभी किसी को पहाड़ की चोटी पर कपड़े प्रेस करते देखा है? या फिर पानी के नीचे हॉकी खेलते? ये बातें मज़ाक लग सकती हैं, लेकिन दुनिया में ऐसे शौक रखने वाले लोग वाकई मौजूद हैं। आज हम आपको बताएंगे कुछ ऐसे ही अजीब और अनोखे शौकों के बारे में जो दुनिया भर में लोगों के बीच मशहूर हैं। ये शौक न सिर्फ अलग हैं, बल्कि ये उनके जुनून, सोच और साहस को भी दर्शाते हैं।

अंडरवॉटर हॉकी

हॉकी तो आपने जमीन पर खेलते देखी होगी, लेकिन अंडरवॉटर हॉकी? जी हां, ये असली है। इस हॉबी में खिलाड़ी पानी के अंदर छोटी सी स्टिक और डिस्क से हॉकी खेलते हैं। इसे 'ऑक्टोपुश' भी कहा जाता है और इसकी शुरुआत यूके में हुई थी। खिलाड़ियों को सांस लेने के लिए बार-बार सतह पर आना पड़ता है। इसमें दम, तकनीक और तालमेल तीनों की जरूरत होती है।

ट्री क्लाइम्बिंग

ये सिर्फ बच्चों का खेल नहीं है। बहुत से लोग इसे प्रोफेशनल तौर पर अपनाते हैं और ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर चढ़ते हैं, वहां कैंपिंग करते हैं या बर्ड वॉचिंग करते हैं। जापान, अमेरिका और जर्मनी में यह शौक काफ़ी पॉपुलर है। कुछ लोग इसे ध्यान और मानसिक शांति के लिए करते हैं। ये शारीरिक रूप से भी फिट रहने में मदद करता है।

शौक सिर्फ समय बिताने का जरिया नहीं, पहचान बन जाते हैं

इन अनोखे और अजीब शौकों से साफ़ है कि शौक सिर्फ एक टाइमपास नहीं, बल्कि लोगों के लिए एक जुनून, एक जुनून से बढ़कर पहचान बन जाते हैं। दुनिया भर में लोग अपने इंटरेस्ट को नई ऊँचाइयों तक ले जाते हैं।

सैंड आर्ट

रेत पर बनी कलाकृतियाँ सिर्फ सुन्दर ही नहीं होतीं, बल्कि ये जीवन की अस्थायिता की भी याद दिलाती हैं। यह एक ऐसा शौक है जिसमें कलाकार कुछ ही घंटों में रेतीली सतह पर ऐसी आकृतियाँ बना देते हैं जिन्हें देखकर आंखें ठहर जाती हैं। भारत के सुदर्शन पटनायक जैसे कलाकारों ने इसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाई। यह शौक समुद्र किनारे रहने वालों में खासा लोकप्रिय है। रेत के महलों से लेकर सामाजिक संदेशों तक, हर तरह की कला यहां दिखती है।

म्यूरल्स बनाना

ये शौक सिर्फ कला तक सीमित नहीं है, यह सामाजिक बदलाव का जरिया भी बन चुका है। लोग दीवारों पर पेंटिंग बनाकर समाज को जागरूकता का संदेश देते हैं। भारत में कई म्यूरल आर्टिस्ट ने दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु की दीवारों को जीवंत बना दिया है। इससे शहरी सौंदर्यीकरण भी होता है और कलाकारों को पहचान भी मिलती है। यह शौक कला और सामाजिक चेतना का अनोखा संगम है।

सबसे बड़ा उड़ने वाला तोता, लंबाई एक मीटर तक

इस सुंदर चटक नीले रंग और काली चोंच खाले तोते की गिनती दुनिया के सबसे बड़े उड़ने वाले तोतों में होती है (जैसे दुनिया का सबसे बड़ा तोता 'ककापो' है, लेकिन यह उड़ नहीं पाता)। नीले रंग के ये तोते ताड़ के पेड़ों पर रहते हैं और सामाजिक पक्षी है। ये समूह में रहते हैं और समूह में ही उड़ते हैं।

आकार एवं रंग रूप

लंबाई की दृष्टि से यह दुनिया का सबसे बड़ा तोता है। इनकी लंबाई चोंच से लेकर पूंछ तक लगभग 1 मीटर तक नापी गई है। वजन 1.2 से 1.7 किलोग्राम तक होता है। पुंछ लंबी और तीखी होती है। पंख के पर नीले, ऊपर हल्के नीले और गले के पंख कभी-कभी हल्के भूरे भी होते हैं।

क्या खाता है

मुख्यतः फल एवं दाने ही इसका भोजन होता हैं। ये अपनी मजबूत चोंच से नट फलों के कठोर छिलकों को तोड़ने में सक्षम रहता है। ताड़ की 3 प्रजातियों के नट फलों को पेड़ों के ऊपर चढ़कर तोड़ते है और फिर नीचे आकर उन्हें खोलते हैं। विशेष रूप से एकबूरी और बोकेवा ताड़ के बीज की गिरी इन्हें पसंद है।

कहां मिलता है

ट्रॉपिकल और स्थलीय आवास इसे पसंद है। ये जंगलों और घास के मैदानों में रहते है जहां ताड़ के वृक्ष बहुतायत में मिलते हैं। बोलिविया, ब्राजील और पैराग्वे में मुख्य रूप से पाए जाते हैं। दुनिया में वर्तमान में इनकी केवल 6500 संख्या ही बची है। खेती के लिए और शहरी आवास के लिए जमीन के बढ़ते उपयोग से संख्या और भी घटती जा रही है।

- हायासिंथ मकाऊ दुनिया का सबसे बड़ा उड़ने वाला तोता है, जिसकी लंबाई लगभग 1 मीटर तक होती है।
- यह तोता मुख्य रूप से ब्राजील, बोलिविया और पराग्वे में पाया जाता है और ताड़ के पेड़ों वाले उष्णकटिबंधीय इलाकों में रहता है।
- इनकी चोंच बहुत मजबूत होती है, जिससे ये ताड़ के नट्स और बीजों के सख्त छिलकों को आसानी से तोड़ लेते हैं।
- वर्तमान में इनकी जनसंख्या बहुत कम हो गई है, और इन्हें खतरे में मानी जाने वाली प्रजातियों की श्रेणी में रखा गया है।

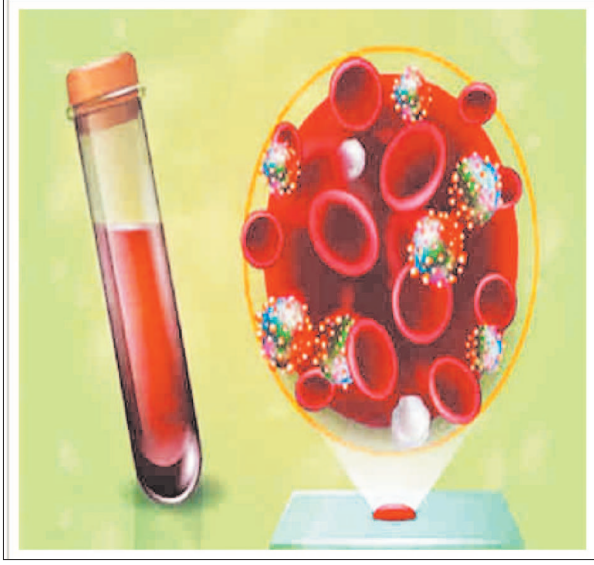

वैज्ञानिकों को मिला दुनिया का सबसे दुर्लभ ब्लड, जो सिर्फ एक इंसान के शरीर में पाया गया

ब्लड ग्रुप्स को लेकर दुनिया में एक चौंकाने वाली खोज हुई है। फ्रांस की ग्वाडेलूप की 68 वर्षीय महिला के खून में पाया गया 'Gwada Negative' नाम का ब्लड ग्रुप दुनिया का सबसे दुर्लभ है। यह ब्लड टाइप अब तक सिर्फ एक ही इंसान में पाया गया है। यह अब तक का सबसे दुर्लभ रक्त समूह माना जा रहा है। वैज्ञानिकों ने इसे इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ ब्लड ट्रांसफ्यूजन द्वारा मान्यता दिलवाकर 48वें ब्लड ग्रुप सिस्टम के रूप में दर्ज किया है। बता दें कि 'Gwada Negative' एक ऐसा ब्लड ग्रुप है जिसमें श्वस्रएंटीजन पूरी तरह से मौजूद नहीं है। आमतौर पर यह एंटीजन हर इंसान के रेड ब्लड सेल्स में पाया जाता है, लेकिन इस महिला के खून में इसकी पूरी तरह से गैर-मौजूदगी है। वैज्ञानिकों ने इसे EMM-negative system नाम दिया है।

इस महिला को किसी और का ब्लड नहीं चढ़ाया जा सकता

वहीं श्वस्र के मुताबिक, यह स्थिति इस महिला को मेडिकल साइंस में अनोखा बनाती है। इस महिला को न ही किसी और का ब्लड चढ़ाया जा सकता है और न ही उसका खून किसी और के लिए काम आएगा। यानी वो सिर्फ खुद से मैच होती हैं। श्वस्र के प्रमुख बायोलॉजिस्ट थियरी पेयराई का कहना है कि इस महिला को यह खून दोनों माता-पिता से म्यूटेटेड जीन मिलने के कारण मिला है। इस वजह से उसका खून दुनिया में सबसे अलग और एकदम अनोखा बन गया है। इस खोज की खास बात यह भी है कि इसे ISBT ने जून 2025 में मिलान में हुए ब्लड साइंस सम्मेलन में आधिकारिक रूप से मान्यता दी है।

कैसे हुई थी खोज?

बता दे कि इस रहस्यमयी ब्लड ग्रुप की शुरुआत 2011 में हुई थी, जब ग्वाडेलूप मूल की महिला, जो उस वक्त पेरिस में रह रही थी, की एक सामान्य सर्जरी से पहले ब्लड टेस्ट किया गया। उस दौरान डॉक्टरों को उसके खून में एक ऐसा एंटीबॉडी मिला, जो किसी भी पहचान किए गए ब्लड ग्रुप से मेल नहीं खा रहा था। तकनीक सीमित थी, इसलिए पहचान नहीं हो सकी। 2019 में 'नेक्स्ट जनरेशन सीक्वेंसिंग' टेक्नोलॉजी के जरिए वैज्ञानिकों ने उसी महिला के पुराने सैंपल की दोबारा जांच की और तब जाकर इस रहस्य से पर्दा उठा। इस खोज ने मेडिकल साइंस में एक नया अध्याय जोड़ दिया और वैज्ञानिकों को यह समझने में मदद की कि इंसानी शरीर में ब्लड ग्रुप्स कितने अधिक विविध हो सकते हैं।

इस खोज का क्या है मेडिकल महत्व?

दरअसल Gwada Negative सिर्फ एक वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं, बल्कि दुर्लभ ब्लड डिसऑर्डर्स से जूझ रहे लोगों के लिए भी एक उम्मीद बन सकता है। मेडिकल साइंस में हर नए ब्लड ग्रुप सिस्टम की पहचान ब्लड ट्रांसफ्यूजन के जोखिम को कम करने और जटिल केसों में इलाज को सुरक्षित बनाने में मदद करती है।

पंकज पाराशर की ओटीटी सीरीज में निगेटिव किरदार निभाएंगी शीना चौहान

निर्देशक पंकज पाराशर ने अपनी आगामी ओटीटी सीरीज में अभिनेत्री शीना चौहान की नकारात्मक भूमिका को लेकर बातचीत की। शीना को कास्ट करने को लेकर पंकज पाराशर ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, 'मैं अपनी अगली ओटीटी सीरीज के लिए नेगेटिव लीड रोल में शीना को चुनकर खुश हूं, क्योंकि उनमें इस किरदार के लिए जरूरी सभी खूबियां हैं, खासकर मार्शल आर्ट्स की उनकी ट्रेनिंग। एक एक्ट्रेस के तौर पर वह बहुत उत्साहित और कमिटेड भी हैं। अपने काम के प्रति उनका समर्पण बहुत पसंद है।' नए प्रोजेक्ट के बारे में बात करते हुए शीना चौहान ने कहा, 'यह खबर मेरे जन्मदिन के आस-पास आई और इसने मेरे जन्मदिन को बहुत खास बना दिया। मैंने हमेशा पंकज सर और उनकी ओर से वर्षों से बनाए गए शानदार, यादगार महिला किरदारों की तारीफ की है। इसलिए, जब मैं उनसे मुंबई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में मिली और उन्होंने मेरे साथ इस प्रोजेक्ट के बारे में बात की, तो मैंने उनसे बात की।

शीना चौहान ने कहा, 'मुझे किरदारों और कहानियों को जीवंत करने से ज्यादा कुछ पसंद नहीं है। मैं हर रोल में अपना दिल और जान लगा देती हूं, इस उम्मीद के साथ कि मैं अपनी कहानियों के जरिए लोगों को प्रेरित और उत्साहित कर सकूंगी। एक्टिंग मुझे अपने असली मकसद को जीने का मौका देती है। यह मुझे अपनी थिएटर ट्रेनिंग, मार्शल आर्ट्स और फिटनेस का इस्तेमाल करके एक गहरे और दमदार किरदार को गढ़ने का मौका देती है। मैं इस सफर को शुरू करने के लिए सच में बहुत उत्साहित हूं।' सीक्रेट एजेंट्स पर आधारित आने वाली जासूसी सीरीज इस सितंबर में शुरू होने वाली है। शीना इसके बाद पैन-इंडिया साउथ फिल्म 'जटास्य मरणं ध्रुवम' में जे. डी. चक्रवर्ती के साथ नजर आएंगी, जिसमें वह एक एक्शन-पैक्ड रोल में पुलिस अफसर की भूमिका निभा रही हैं। वह इस सीरीज में एक्शन सीन करती हुई भी नजर आएंगी। एक्ट्रेस के पास एक इंटरनेशनल वेब सीरीज भी है; इस साल उनकी लगभग पांच रिलीज लाइन में हैं।

अनिता हसनंदानी ने साझा की करियर और टीवी की दुनिया से जुड़ी बातें

करीब दो दशक से टीवी इंडस्ट्री का हिस्सा रहीं अनिता हसनंदानी ने छोटे पर्दे के कई दौर देखे हैं। सास-बहू सीरियल से लेकर ओटीटी तक का बदलाव देखा। बदलती हुई इंडस्ट्री के साथ उन्होंने खुद को भी बदला है। इन दिनों वह टीवी सीरियल 'तुम से तुम तक' में राजनंदिनी का किरदार निभा रही हैं। अमर उजाला डिजिटल से की गई बातचीत में अनिता ने अपने करियर, टीवी इंडस्ट्री और अपनी बदली हुई सोच पर खुलकर बात की है।

रिश्तों में बेवजह की उलझनें पसंद नहीं हैं

सीरियल 'तुम से तुम' में अनिता का किरदार राजनंदिनी अपने मन की बात को खुलकर कहता है। क्या असल जिंदगी में अनीता हसनंदानी भी ऐसी हैं। इस पर वह कहती हैं, 'मैं अपने बारे में ऐसा तो नहीं कहूंगी। मुझे लगता है कि जिंदगी में कोई भी पूरी तरह सॉर्टेड नहीं होता है। हां, मैं अपनी फीलिंग्स को लेकर हमेशा ईमानदार रही हूं। रिश्तों में मुझे बेवजह की उलझनें पसंद नहीं हैं। मुझे रिश्तों में साफगोई पसंद है। शायद यही वजह है कि मैं राजनंदिनी से भी तुरंत जुड़ गई। उसके अंदर एक गरिमा है, एक सादगी है।' वह आगे कहती हैं, 'मुझे इस सीरियल में रिश्तों की कई परतें दिखी हैं। कोई भी किरदार परफेक्ट नहीं है और यही बात इसे अलग बनाती है।'

अच्छी कहानियां और काम याद रहता है

सास-बहू से लेकर सुपरनैचुरल और ओटीटी तक, अनिता ने टीवी का हर दौर देखा है। लेकिन किसी ट्रेंड की आलोचना करने के बजाय वह खुद में आए बदलाव की बात करती हैं। अनीता कहती हैं, 'अगर एक चीज वापस नहीं आनी चाहिए, तो वो है खुद पर जरूरत से ज्यादा दबाव डालना। पहले मैं छोटी-छोटी बातों पर बहुत परेशान हो जाती थी। अब समझ आया है कि प्रोसेस पर भरोसा रखना चाहिए। आखिर में ट्रेंड नहीं अच्छी कहानियां और अच्छा काम ही याद रहता है।'

लोग सिर्फ इंडस्ट्री का ग्लैमर देखते हैं

टीवी इंडस्ट्री को लेकर सबसे बड़ी गलतफहमी क्या है? इस सवाल पर अनिता जवाब देती हैं, 'लोगों को लगता है कि रोज टीवी पर दिखते हैं, तो शायद यह आसान काम होगा। लेकिन इसके पीछे कितनी मेहनत होती है, इसका अंदाजा बहुत कम लोगों को है। लंबे वक्त तक शूटिंग, कम समय में तैयारी और लगातार इमोशनल सीन करना आसान नहीं होता है। लोग ग्लैमर देखते हैं लेकिन उसके पीछे का अनुशासन और मेहनत नहीं।'

कई प्रोजेक्ट्स ठुकराने पर बोलीं 'अनुपमा' की अद्रिजा रॉय

'अनुपमा' में राही कपाड़िया के किरदार से अभिनेत्री अद्रिजा रॉय ने घर-घर में पहचान बनाई है। इस बीच इंटरव्यू में अद्रिजा ने प्रोजेक्ट्स को ठुकराने और टीवी की दुनिया में आए बदलावों पर खुलकर बात की।

उन्होंने कहा कि वह वहीं किरदार निभाना पसंद करती है, जिससे उन्हें दिल से जुड़ाव महसूस होता है। वहीं उन्होंने आगे कहा कि अब महिलाओं के लिए लिखे जाने वाले किरदारों में काफी सुधार आया है और दर्शक भी महिला केंद्रित कहानियों को खुले दिल से स्वीकार कर रहे हैं। अद्रिजा रॉय ने कहा, ''मुझे लगता है कि चीजें पहले से काफी बेहतर हुई हैं। अब महिलाओं को 'यादा अहमियत रखने वाले किरदार मिल रहे हैं। हालांकि अभी भी सुधार की गुंजाइश है, लेकिन अ'छी बात यह है कि दर्शक अब महिलाओं के नेतृत्व वाली कहानियों को स्वीकार कर रहे हैं। यह इंडस्ट्री के लिए एक सकारात्मक संकेत है।''

जब उनसे पूछा कि किसी एक किरदार की सफलता के बाद क्या कलाकार के एक जैसी भूमिकाओं में बंध जाने का खतरा बढ़ जाता है। इस पर उन्होंने कहा कि ऐसा होना स्वाभाविक है, क्योंकि जब कोई किरदार लोकप्रिय हो जाता है तो लोग उसी तरह के रोल में कलाकार को देखने लगते हैं।

उन्होंने कहा, ''जब कोई भूमिका लोकप्रिय हो जाती है तो लोग आपको उसी अंदाज में देखने लगते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि आपने उस किरदार को अ'छी तरह निभाया है। मैं इसके लिए किसी को दोष नहीं देती। लेकिन एक कलाकार के तौर पर मैं हमेशा खुद को और दर्शकों को सरप्राइज करना चाहती हूं। मैं एक ही तरह के किरदार बार-बार नहीं करना चाहती। मेरे लिए हर नया रोल कुछ नया सीखने का मौका होना चाहिए।''

अद्रिजा ने अपने करियर के फैसलों को लेकर भी बात की। उन्होंने कहा, ''हर अभिनेता चाहता है कि उसके पास चुनने के लिए बहुत सारे विकल्प हों, लेकिन यह इंडस्ट्री हमेशा इस तरह काम नहीं करती। कई बार प्रोडक्शन हाउस आपको ऐसा किरदार देता है, जो शायद आपकी पहली पसंद न हो। ऐसे में पूरी तस्वीर देखनी चाहिए। कहानी क्या है, टीम कैसी है और किरदार शो में क्या योगदान दे रहा है, इन सभी चीजों को समझना जरूरी होता है। हर स्थिति में कोई एक सही या गलत जवाब नहीं होता। हर कलाकार को अपने हिसाब से फैसला लेना पड़ता है।''

बातचीत के दौरान अद्रिजा ने खुलासा किया कि उन्होंने अपने करियर में कुछ ऐसे प्रोजेक्ट्स को मना किया है, जिनसे वह खुद को जोड़ नहीं पाईं।

उन्होंने कहा, ''हां, मैंने कुछ प्रोजेक्ट्स के लिए मना किया है। ऐसा इसलिए नहीं था कि वे खराब थे, बल्कि इसलिए क्योंकि मैं उन किरदारों से जुड़ाव महसूस नहीं कर पाई। अगर मैं किसी भूमिका पर विश्वास नहीं करती हूं, तो मेरे लिए उसके साथ न्याय करना मुश्किल हो जाता है। मैं इंतजार करना पसंद करूंगी, लेकिन ऐसा काम करना चाहती हूं जो मुझे अंदर से उत्साहित करे।''

'श्री श्री' में पहली बार साथ दिखेंगे दुलकर सलमान-पूजा हेगड़े

दुलकर सलमान ने अपनी 41वीं फिल्म का टाइटल अनाउंस कर दिया है। अब तक 'DQ41' के नाम से पहचानी जा रही इस फिल्म का नाम 'श्री श्री' रखा गया है। दुलकर ने सोशल मीडिया पर फिल्म का फर्स्ट लुक पोस्टर शेयर करते हुए इसकी अनाउंसमेंट की। फिल्म के फर्स्ट लुक पोस्टर में दुलकर और पूजा हेगड़े खूबसूरत प्राकृतिक वादियों के बीच नजर आ रहे हैं। पोस्टर पर 'लव विल स्पार्क अगेन' टैगलाइन भी लिखी गई है, जो फिल्म की रोमांटिक थीम की झलक देती है। खास बात यह है कि इस फिल्म के जरिए दुलकर और पूजा पहली बार बड़े परदे पर साथ नजर आएंगे। फिल्म की शूटिंग काफी समय पहले शुरू हो चुकी थी, लेकिन अब जाकर मेकर्स ने इसका नाम सामने रखा है। इससे पहले मेकर्स ने फिल्म की शूटिंग की कुछ झलकियां साझा की थीं।

धीक्षित शेट्टी भी अहम भूमिका में

फिल्म का लेखन और निर्देशन रवि नेलाकुडिटी ने किया है। वहीं इसका निर्माण सुधाकर चेरुकुरी ने एसएलवी सिनेमाज के बैनर तले किया है। इसमें धीक्षित शेट्टी भी अहम भूमिका निभा रहे हैं और म्यूजिक जी.वी. प्रकाश कुमार ने दिया है। फिल्म को मल्टी लैंग्वेज पैन इंडिया फिल्म के रूप में 2026 में रिलीज किया जाएगा।

एक-दूजे के हुए आकांक्षा रंजन और शरण शर्मा

आकांक्षा रंजन ने 11 जुलाई यानी शनिवार देर रात फिल्ममेकर शरण शर्मा से रजिस्टर्ड मैरिज कर ली। इस शादी में बॉलीवुड के कई सेलेब्स और उनके करीबी लोग शामिल हुए। 12 जुलाई को मुंबई में यह कपल एक शानदार रिसेप्शन भी देगा।

आकांक्षा ने लिखा प्यार भरा संदेश

आकांक्षा रंजन ने इंस्टाग्राम पर अपनी शादी की तस्वीरें शेयर करते फिल्म 'मिस्टर एंड मिसेज माही' का एक गाना लिखा, जिसके जरिए अपनी फीलिंग्स को फैंस के साथ शेयर किया। कैप्शन में गाने के बोल वह लिखती हैं, जो इस तरह हैं- 'तू ना तो घर घर नहीं लगता, तू है तो डर नहीं लगता।' आगे उन्होंने इनफिनिटी सिंबल का इमोजी भी शेयर किया है। इसका मतलब है कि शरण के साथ आकांक्षा का रिश्ता अब अनंत काल तक के लिए जुड़ गया है।

शादी की तस्वीरों में आकांक्षा ने गोल्डन वर्क वाली लाल साड़ी पहनी है। इसके साथ हैवी ब्राइडल ज्वेलरी जैसे चूड़ा, कलीरे पहन रखी है। हाथों में मेहंदी लगाई है। वहीं शरण ने एंब्रॉयडरी वाली जैकेट के साथ सफेद कुर्ता-पजामा पहना है। दोनों तस्वीरों में हंसते हुए नजर आ रहे हैं, एक-दूसरे का हाथ उन्होंने थामा हुआ है।

आकांक्षा रंजन के करियर फ्रंट की बात करें तो वह कियारा आडवाणी स्टारर फिल्म 'गिल्टी' और आलिया भट्ट फेम 'जिगरा' में नजर आईं। आलिया भट्ट भी आकांक्षा के प्री-वेडिंग फंक्शन में शामिल हुई थीं। वहीं शरण शर्मा ने बतौर निर्देशक 'मिस्टर एंड मिसेज माही' के अलावा 'गुंजन सक्सेना- द कारगिल गर्ल' जैसी फिल्में बनाई हैं।

मां के कपड़े पहनकर बनाती थी विडियोज

मां के सूट पहनकर 90 के दशक के गानों पर विडियो बनाने वाली भागलपुर (बिहार) की एक लड़की को शायद तब अंदाजा नहीं रहा होगा कि एक दिन लोग उसे उसके असली नाम से 'यादा उसके किरदार 'सान्विका' के नाम से पहचानेंगे। सोशल मीडिया से अभिनय तक का सफर तय करने वाली सचिता बसु आज भी खुद को सीखने की प्रक्रिया में मानती हैं। हाल ही में 'दुकरा के मेरा प्यार' सीजन-2 के लिए सचिता ने हमसे अपने संघर्ष, वायरल होने और अपने किरदार से मिले आत्मविश्वास पर खुलकर बात की।

मम्मी के कपड़े पहनकर बनाती थी विडियोज

हां, यह बात बिल्कुल सच है कि मैं अपनी मां के कपड़े पहनकर रील्स बनाती थी। मां ही मेरे विडियोज शूट किया करती थीं। ट्रडिशनल ड्रेस में लोग मेरे विडियोज पसंद करते थे। धीरे-धीरे मैं उसी में ढल गई। मेरी मम्मी सलमान खान की तगड़ी फैन हैं। वह नैशनल एथिलीट रही हैं। उन्होंने अपने कोच के कहने पर सलमान सर की फिल्म साजन और हम आपके हैं कौन थिएटर में देखने के लिए 500 मीटर की दौड़ जाती थी। मैं नौवीं क्लास में थी, स्कूल से आने से पहले तक मां मेरे लिए 90'ह्य के गाने सिलेक्ट करके रखती थीं। फिर मैं मां के सूट पहनकर फटाफट 10-12 विडियोज शूट करती थी। मेरी खिड़की से हवा आती थी, बाल उड़ रहे होते थे और मैं विडियोज बनाती थी। यह हमारा रूटीन था। स्कूल में चाहे कितना भी बोरिंग दिन रहा हो, मैं यही सोचती थी कि घर जाकर विडियोज बनाऊंगी।

फिल्में देखना, अखबार पढ़ना मेरे रूटीन में है

सोशल मीडिया आज छिपे टैलंट को मुकाम दे रहा है। मुझे भी पहला काम (फिल्म फर्स्ट डे, फर्स्ट शो) उसी के जरिए मिला। मैं सोशल मीडिया पर जो विडियोज डालती हूं, उसमें गानों की लिप्सिंग रहती है लेकिन ऐक्टिंग एक अलग प्रक्रिया है। अपनी आवाज को ऐक्ट के साथ सामने लाना और जिस फील के साथ आप सीन शूट कर रहे हो, लोगों तक पहुंचाना इतना आसान नहीं है। बतौर कलाकार मैं इसका मजा ले रही हूं। फिल्में देखना, अखबार पढ़ना मेरी दिनचर्या में शामिल हो गया है क्योंकि मैं अपना क्राफ्ट बेहतर करने की कोशिश में लगी रहती हूं। मैंने थिएटर के लोगों के साथ काम किया है तो उनसे भी काफी कुछ सीखने को मिला है। मैं चाहती हूं कि लोग बोलें कि मैं अ'छी कलाकार हूं।

बाइक चलाते समय कई बार गिरी

संचिता, सान्विका से बिल्कुल विपरीत है। वह बहुत शांत लड़की है, किसी की बात अगर बुरी भी लग जाए तो भी जल्दी अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं करती है। कोने में अकेले जाकर रो लेती है। वहीं, सान्विका बिंदास और बेहद जिद्दी है। उसने मुझे एक स्ट्रेंथ दी है। आज मैं कहीं जाती हूं तो लोग मुझे सान्विका के नाम से बुलाते हैं। 12वीं तक मैं गर्ल्स कॉलेज में पढ़ी थी, उसके बाद 'फर्स्ट डे फर्स्ट शो' की शूटिंग में व्यस्त हो गई तो कॉलेज जाना नहीं हो पाता था। इस किरदार में मुझे कॉलेज लाइफ जीने का मौका भी मिला। मैं जुलाई में अपने ग्रैजुएशन के फाइनल इयर के एग्जाम देने वाली हूं। इस किरदार के लिए ही मैंने बाइक चलाना सीखी। पहले सीजन में बाइक चलाने के दौरान तो मैं कई बार गिरी हूं। हम लोग एक सीक्वेंस शूट कर रहे थे, उस दौरान चार टेक हुए और मैं काफी नर्वस हो गई थी। हर बार ढलान पर बाइक चढ़ाते समय मैं गिर जाती थी। पांचवें टेक में वो शॉट पूरा हुआ था।

पापा से बहुत प्यार करती हूं

हां, यह भी हकीकत है कि मैंने अपने नाम के आगे मां बीना और पापा सुरेंद्र का पहला अक्षर मिलाकर 'बसु' लगाया है। मैं पापा से बहुत प्यार करती हूं। अभी कुछ समय पहले हमारे पटना इवेंट में वह आए थे। मैं उनकी आंखों में आंसू देखकर अपने लिए खुशी देख पा रही थी। मुझे उनको हमेशा गर्व महसूस करवाना है। पापा चाहते थे कि मैं यूपीएससी करूं और मम्मी का सपना था कि मैं डॉक्टर बन जाऊं लेकिन मैं धीरे-धीरे सोशल मीडिया पर वायरल हो गई। मुझे भी नहीं पता था कि मैं कभी इस लाइन को चुनूंगी, बस मुझे मजा आ रहा था। अब यहां काम कर रही हूं तो अपनी जिम्मेदारी का अहसास हो रहा है क्योंकि फैंस आपसे अपेक्षा रखते हैं। मैं ऐसी हूं कि मुझे सोशल मीडिया पर भी लोग ट्रोल नहीं करते हैं।

सोलह दूनी आठ नई दृष्टिबिंदु

साप्ताहिक कॉलम

याज्ञवल्क्य मिश्रा

चैम्बर ही नहीं है

पीएचक्यू में अंधाधुंध साहबान की वापसी हुई है। मसला ये हो गया है कि,जितने साहब आ गए हैं सबका अपना अपना जुदा दर्जा है। अब उनको उस हिसाब से चैंबर या कि कक्ष मिलना चाहिए। लेकिन उतना तो चैंबर ही नहीं है। मीणा और शर्मा का चैंबर खाली होगा। एक में प्रशांत की बैठकी लग लेगी, लेकिन बाकी किधर जाएंगे ?

प्रभार तो है ही नहीं

सुशासन सरकार जब करती है कमाल करती है। अब देखिए एक साथ दो दर्जन खाकीदार साहबों का ट्रांसफर कर दिया गया। इस ट्रांसफर में फिल्ड से जिनकी वापसी हुई उसमें से किस को क्या प्रभार मिलेगा यह आदेश में है ही नहीं। अब सरकार जिस रफ़्तार से काम करती है उसमें ये अंदाज कैसे लगाया जाए कि, मुख्यालय पहुंचे साहब लोग को प्रभार या कि दायित्व कब तक मिलेगा ? याद रखना चाहिए एक साहब का क़ि स्सा जो किसी संवेदनशील जगह से रिलीव हुए और उन्हें नया चार्ज ही नहीं मिला। साहब भी महान थे उन्होंने पीएचक्यू आना बंद कर दिया, अब भला बगैर चार्ज के पीएचक्यू आकर करते भी क्या। प्यारी सुशासन सरकार निर्बाध तनखा दे ही रही थी। पीएचक्यू ने यह मान लिया था कि साहब पीएचक्यू इसलिए नहीं दिख रहे हैं क्योंकि वे पुरानी जगह पर वापस पोस्ट हो लिए हैं। पीएचक्यू को पूरे पूरे आठ महीने बाद होश आया कि अरे हजूर को ट्रांसफर के बाद पीएचक्यू में कोई चार्ज ही नहीं दिए हैं।

चैंबर ही नहीं है

पीएचक्यू में अंधाधुंध साहबान की वापसी हुई है। मसला ये हो गया है कि,जितने साहब आ गए हैं सबका अपना अपना जुदा दर्जा है। अब उनको उस हिसाब से चैंबर या कि कक्ष मिलना चाहिए। लेकिन उतना तो चैंबर ही नहीं है। मीणा और शर्मा का चैंबर खाली होगा। एक में प्रशांत की बैठकी लग लेगी, लेकिन बाकी किधर जाएंगे ?

प्रभार तो है ही नहीं

सुशासन सरकार जब करती है कमाल करती है। अब देखिए एक साथ दो दर्जन खाकीदार साहबों का ट्रांसफर कर दिया गया। इस ट्रांसफर में फिल्ड से जिनकी वापसी हुई उसमें से किस को क्या प्रभार मिलेगा यह आदेश में है ही नहीं। अब सरकार जिस रफ़्तार से काम करती है उसमें ये अंदाज कैसे लगाया जाए कि, मुख्यालय पहुंचे साहब लोग को प्रभार या कि दायित्व कब तक मिलेगा ? याद रखना चाहिए एक साहब का क़ि स्सा जो किसी संवेदनशील जगह से रिलीव हुए और उन्हें नया चार्ज ही नहीं मिला। साहब भी महान थे उन्होंने पीएचक्यू आना बंद कर दिया, अब भला बगैर चार्ज के पीएचक्यू आकर करते भी क्या। प्यारी सुशासन सरकार निर्बाध तनखा दे ही रही थी। पीएचक्यू ने यह मान लिया था कि साहब पीएचक्यू इसलिए नहीं दिख रहे हैं क्योंकि वे पुरानी जगह पर वापस पोस्ट हो लिए हैं। पीएचक्यू को पूरे पूरे आठ महीने बाद होश आया कि अरे हजूर को ट्रांसफर के बाद पीएचक्यू में कोई चार्ज ही नहीं दिए हैं।

हाउ क्यूट

भला काम तब ही का भला काम है जबकि उसे ऐसा करो कि पता ही ना चले। छत्तीसगढ़ में सुशासन सरकार ने इस पाठ को मुकम्मल पढ़ा है। इसी कॉलम में सहाफी बता चुका है कि,सरकार इस प्रयास में है कि,नागरिक इस क़दर स्वतः अनुशासित रहे कि,पुलिस महकमे की जरुरत ही ना पड़े। इसलिए कई जगहों पर एडिशनल एसपी,डीएसपी,टीआई हवलदार सिपाही सबका मामला आंय बांय है।आंय बांय मतलब कहीं पोस्ट है तो आदमी नहीं कहीं पर पोस्ट से ज्यादा आदमी है। अब इसे आप सरकार की लापरवाही कहेंगे तो आप बिल्कुल गलत हैं।सच यही है कि भली सी भोली सी प्यारी सी सुशासन सरकार नागरिकों के खुद ही संविधान के हिसाब से चलने अनुशासित बनाने का उपक्रम में जुटी है,इसलिए ही यह सब हो रहा है। सरकार ऐसा केवल फिल्ड में नहीं कर रही है। सरकार ने बटालियन के जवानों को भी आत्म अनुशासन में रखने की यह शमिर्ली कोशिश की है। प्रदेश में नौ बटालियन ऐसी हैं जहां कमांडेंट ही पोस्ट नहीं है।जबकि हालिया ट्रांसफर लिस्ट से दो बटालियन में दो दो कमांडेंट पोस्ट हो गए हैं। दो दो इसलिए क्योंकि फिल्ड से हटाकर बटालियन भेजे हैं पर जो पहले से बटालियन में तैनात है उसे हटाया ही नहीं गया है।

माथा देख कर तिलक

ये जलनखोरों की पुरानी बात है जो परंपरा से चली आ रही है। सरकार ने कहा है कि,पुलिस डिपार्टमेंट बेहद डिसिप्लिन वाला डिपार्टमेंट है,इसलिए जहां जिस पद के अनुसार उचित व्यक्ति मिलेगा वहां उसकी पोस्टिंग करेंगे। मतलब ये कि भई डीआईजी की पोस्ट नहीं है तो डीआईजी को कहीं पोस्ट नहीं करेंगे। अब जलनखोर पत्रकारों को उचका रहे हैं कि सरकार से पूछिए कांकेर दंतेवाड़ा में जो ऑफिस खुले हुए हैं डीआईजी के,वहां पोस्टिंग नहीं कर सकते तो धान चावल का स्टॉक रखने वाला गोदाम बनाने के लिए दे दें,क्योंकि चावल के लिए ना सरकार के पास जगह है ना भारतीय खाद्य निगम के पास। जलनखोर यह भी कोचक रहे हैं कि,अभी फिल्ड में जो तैनाती है उसमें कितने डीआईजी स्तर के एसपी हैं,सरकार को यह भी बताना चाहिए। लेकिन जैसा कि सब जानते हैं सहाफी सरकार का भक्त है और पूरा पूरा भक्त है। सरकार जो करती है ठीक करती है। सरकार यदि कुछ नहीं करती है तो केवल इसलिए नहीं करती है क्योंकि वैसा करना अनुशासित विभाग के लिए ठीक नहीं होता है। जलनखोरों की ऐसी कम और तैसी ज्यादा। सहाफी जोर से नारा लगा रहा है सुशासन सरकार ज़िंदाबाद, चाहें तो आप भी लगाएं।

ये कौन चित्रकार है

महीनों से लिस्ट लिस्ट लिस्ट की खूब चिल्लमचोट चली। कई स्तंभों में स्थाई कॉलम की तरह भविष्यवाणी लिखी जाती रही। अब वह भविष्यवाणी का कॉलम कुछ हफ़्तों तक थैंक्यू रहेगा। लेकिन इस लिस्ट के आने के बाद दो ज़िलों में हैरानी कम परेशानी ज़्यादा है। एक तो इंडस्ट्रियल डिस्ट्रिक्ट है। यह वह ज़िला है जहां कप्तान को लेकर बवाल की हद तक मामला है।समझना मुश्किल है कि,साहब पर करप्शन के छींटे जो दिखाए बताए जा रहे हैं वह आयोजित प्रायोजित है या सच्ची मुच्ची वाले हैं।इस जिले में लॉ एंड ऑर्डर का सितम अपनी जगह है।इंडस्ट्रियल इलाक़ा है तो ट्रांसपोर्ट से लेकर कबाड़ लोहा का टंटा अलग है।

मसला ये भी है कि,एफआईआर होती है और कोर्ट में धाँय से उड़ जा रही हैं जनवरी से लेकर जून तक कम से कम 15 एफआईआर को कोर्ट ने उड़ा दिया है। एक महिला डीएसपी तो खैर आईजी का इंटरफेयर ना होता तो रानी लक्ष्मी बाई की जय कर ही गई थी। एक और ज़िला सरहदी है। हार्ड कोर जज्बाती एक यहां भी कप्तान है। मसला इन जनाब को लेकर भी गहन गंभीर है। जज्बाती होना अच्छा है लेकिन बहुत जज़्बाती होना खुद के साथ साथ जहाज डुबोने वाला होता है। साहब के जाने पहचाने दुश्मनों ने जो कि उनके साथ दोस्त की तरह पेश आते हैं वही यह उड़ा रहे हैं कि,साहब को उनकी मर्जी के बगैर कोई छू नहीं सकता क्योंकि वे डायरेक्ट गुजरात के हैं।इसलिए लिस्ट में नाम आकर कट गया। अब मान लेते हैं कि यही सही बात है तो भी जिस अंदाज में कहीं जा रही है वह उस जज़्बाती अफसर के लिए पॉज़िटिव साउंड तो नहीं ही करती। लेकिन इन सबके दूर अपने राम का वही परमानेन्ट थ्योरी है – सरकार सुशासन की है तो जो भी है,जैसा भी आंय बांय सांय है वही सुशासन है,और हर तरफ अच्छे ही अच्छे और केवल तनखा पर जीने वाले लोग हैं हर बात केवल अफवाह है।

कलेक्टर साहब का ऑर्डर

उत्तर छत्तीसगढ़ के एक जिले में जमीन का खेल हो लिया। मसला ये है कि,उद्योगपति सेठ जी परिवार ने पत्नी जी के नाम जमीन खरीदी। बवाल तब हुआ कि,जब यह बात सामने आई कि,बेचने वाले ने तो तीन एकड़ बेची थी कागज में जमीन तीस एकड़ बिक गई थी। अखबारों में छपा। कलेक्टर साहब ने जांच बैठा दी। प्रतिवेदन आया कि,हाँ जी गड़बड़ घोटाला तो हुआ है। कलेक्टर साहब ने 16 जून को मामले में एफआईआर कराने तहसीलदार को पत्र लिखकर आदेश जारी कर दिया। इसके बाद कलेक्टर साहब चल दिए छुट्टी पर मिथिलांचल। खेल आगे हुआ। तहसीलदार साहब के ऑफिस से एसपी ऑफिस के बीच क़दमों की दूरी है। लेकिन वह आदेश लेकर तहसीलदार पहुँचे ही नहीं। सहाफी ने तहसीलदार साहब से दरयाफ़्त की और पूछा कि,कलेक्टर साहब के आदेश का क्या हुआ,आपने पत्र आगे कब भेजा तो उन्होंने कहा– ह्लबाबू बता पाएंगे ।ह्व सहाफी ने दो दिन बाद फिर से तहसीलदार साहब से पूछा – ह्लसाहब नमस्ते। आपके बाबू ने आपको क्या बताया ?ह्व तहसीलदार साहब समझदार थे, उन्हें पता था फालतू सवाल का जवाब नहीं देना चाहिए,तो कोई जवाब ही नहीं आया। वैसे इस मसले पर कांग्रेसी तूफान मचा रहे हैं। कांग्रेसी आईजी दफ़्तर पहुंच कर बवाल टंटा कर आए। आईजी साहब बहादुर ने फरमाया कि जांच होगी। लेकिन मसला ये है कि,कलेक्टर का आदेश एसपी तक नहीं पहुंचा है तो जांच होगी कैसे। वैसे अफवाह यह भी उड़ी है कि,उद्योगपति परिवार ने दो मंत्रियों की सहज उपलब्धतता के सार्थक सहयोग से पीड़ित के साथ जानें क्या किया है कि,वह भी सहमा सहमा चुप बैठ जो हुआ वही सुशासन है का मंत्र जाप कर रहा है।

यही है सुशासन

एक जिले में दो महीने के भीतर कलेक्टर का तबादला कर दिया गया है। इस आदेश के पीछे कई तरह की खबरें हैं। दिलचस्प यह है कि,हर तैरती खबर कलेक्टर को निदीष और दबाव के आगे नहीं झुकने वाला क़रार दे रही है। अफवाहें जो तैर रही हैं वह एक मंत्री के कुपित होने का इशारा कर रही हैं। इस क़ि स्से को निजी अस्पताल में जच्चा बच्चा की मौत के बाद हुई कार्यवाही से जोड़ा जा रहा है। किस्सागोई में है कि मंत्री जी के कोप मिश्रित स्वर में शब्द पर नियंत्रण नहीं था, जिसका प्रतिरोध कलेक्टर ने कर दिया। बुरी तरह बिफरे मंत्री जी ने उपर फोन खड़का दिया। जिसके बाद बड़े साहब ने फोन कलेक्टर को खड़का दिया। यहाँ कलेक्टर ने बड़े साहब को घटना बताई सुनाई लेकिन बड़े साहब ने जोर चमकाते हुए कह दिया कि,अभी ट्रांसफर हो जाएगा तो क्या करोगे। इस बात को सुनने के बाद कलेक्टर ने बेसाख़्ता कह दिया – 'कर दीजिएगा साहब क्या कर लूँगा।' इसके बाद अगली सुबह ट्रांसफर ऑर्डर जारी हो गया।

पानी साफ कराईए भाई साब

भाई साब लोगों की पार्टी में कुछ न कुछ तो यूँ ही होता रहता है। लेकिन अब सोशल मीडिया पर भी हक्का बक्का कर देने वाली हरकत हो जा रही है। दो मामलों ने गजब ध्यान खींचा है एक तो रामगोपाल के मामले में बीजेपी ने पोस्टर जारी किया उसमें पत्रकार की फोटो चिपका दी गई। फिर मसला थमा ही था कि,तीजन बाई को लेकर एक पोस्ट जारी की गई जिसमें बताया गया कि,सरकार तीजन बाई के नाम पर राज्य अलंकरण जारी करेगी। जाहिर है इसमें सीएम का नाम लिखना था। सोशल मीडिया सम्हालने वालों ने सीएम का नाम भूपेश बघेल लिख दिया। यह भी जानें रखिए कि,इस पर नींद नशा तब चटका जब फोन सीधे इंटेलिजेंस से खड़का और पूछा गया कि भैया पोस्ट करने के पहले पढ़ तो लिया करो। फिर आनन फानन पोस्ट डिलीट हुई और फिर से पोस्ट हुआ। अपने राम का बस इतना निवेदन है कि,सत्ता में रहते हैं तो पानी में नशा आ ही जाता है,संगठन के भाई साहब लोग देख लें टंकी के पानी में गड़बड़ है या पूरे कुएँ में।

धन भी गया और..

ये जो सोशल मीडिया है और इसके लिए जो स्मार्ट मोबाइल है, वो खेल बनाता भी है और बिगाड़ता भी है। लेकिन अपन आस्थावान व्यक्ति हैं। अपना यह मानना है कि,जो होता है सब 'ईश्वर' की मर्जी से होता है। ये 'ईश्वर' की ही मर्जी है कि, एक ऑडियो क्लिप वायरल हो रहा है। यह ऑडियो क्लिप यह बता रहा है कि,महिला नेत्री को एल्डरमेन बनाने के लिए पचास हजार काजू कतली ले ली गई। महिला नेत्री इस ऑडियो क्लिप में बता रही हैं कि लेने वाले ने विधायक जी को देने के नाम पर ले लिया। अब हुआ ये है कि,वो बनी नहीं हैं और काजू कतली भी वापस नहीं हो रहा है। जाहिर है ऑडियो तो वायरल होगा ही।

उनको सिगरेट दीजिए

रामगोपाल जी इन दिनों एसीबी के ऑनरेलबल गेस्ट हैं। यूं उनका जलवा इसलिए भी है क्योंकि वो बीजेपी के एक ओल्ड गार्ड के समधी साहब भी हैं। अब राजनीतिक झुकाव का मसला है कि वे कांग्रेस में हैं।बल्कि कोषाध्यक्ष भी हैं। जैसे ही रामगोपाल एसीबी के ऑनरेबल गेस्ट हुए कांग्रेस ने पूरे प्रदेश में आंदोलन का एलान कर दिया। सहाफी यह नहीं समझ पा रहा है कि,जब इसे दमन की कार्यवाही बताकर विरोध करना था तो तब ही क्यों नहीं किए जब ईसीआईआर से लेकर एफआईआर तक में नाम दर्ज हो गया, अब तो यह भी दिख रहा है कि वैसा विरोध हो ही नहीं रहा जो दर्ज किया जा सके।फिर ये भी एक मुद्दा है कि,कागज में कोषाध्यक्ष तो रामगोपाल हैं ही,तो कांग्रेस विज्ञप्ति में सीधे कोषाध्यक्ष रामगोपाल लिख कर एजेंसियों का विरोध क्यों नहीं कर रही है।

हजारों में अकेला

एक रेंज आईजी साहब के साथ पता नहीं क्या मसला है, जहां भी जिस भी रेंज में जाते हैं उनका नाम आंय बांय वजह से चर्चा में आने लगता है। एकाध जगह हो तो समझ भी आए कि साहब गलत नहीं है बाक़ ी लोग गलत हैं। लेकिन अगर हर जगह का यही मसला हो जाए तो फिर हकीम लुकमान भी क्या करेगा। अफवाह है कि साहब ने इन दिनों फरमान जारी किया है कि,कोई भी चार दिन से उपर की छुट्टी पर जाएगा तो उनकी अनुमति से ही जाएगा। उनके दुश्मन उड़ा रहे हैं कि हर एफआईआर से लेकर हर कार्यवाही तक का पूरा ब्यौरा भी साहब को चाहिए। याने कि जब तक उनकी हाँ नहीं होगी एफआईआर भी रुक जाएगी।इस रेंज में एक थाने का भी जिक्र आता है जिसे लेकर अफवाहें हैं कि, जिस ज़िले में यह थाना है वहां के थानेदार को ना बुलाकर दिगर ज़िले से थानेदार बुलाकर प्रभार दे दिया गया है। लेकिन इन सब सच्ची झूठी बातों से अलग अपना मानना है कि,लोगों को साहब में अच्छा भी खोजना चाहिए। एक गीत भी तो है –'वो तो है अलबेला..हजारों में अकेला..सदा तुमने एब देखा हुनर को ना देखा।' हालाँकि सहाफी ने जब यह बात उनके पूर्व पदस्थापना वाले जिला रेंज में कही तो पलट कर जवाब आया–'आप ही खोज कर वो हुनर बता दो पत्रकार जी।पर खोज जरुर दो।'

भला काम तब ही का भला काम है जबकि उसे ऐसा करो कि पता ही ना चले। छत्तीसगढ़ में सुशासन सरकार ने इस पाठ को मुकम्मल पढ़ा है। इसी कॉलम में सहाफी बता चुका है कि,सरकार इस प्रयास में है कि,नागरिक इस क़दर स्वतः अनुशासित रहे कि,पुलिस महकमे की जरुरत ही ना पड़े। इसलिए कई जगहों पर एडिशनल एसपी,डीएसपी,टीआई हवलदार सिपाही सबका मामला आंय बांय है।आंय बांय मतलब कहीं पोस्ट है तो आदमी नहीं कहीं पर पोस्ट से ज्यादा आदमी है। अब इसे आप सरकार की लापरवाही कहेंगे तो आप बिल्कुल गलत हैं।सच यही है कि भली सी भोली सी प्यारी सी सुशासन सरकार नागरिकों के खुद ही संविधान के हिसाब से चलने अनुशासित बनाने का उपक्रम में जुटी है,इसलिए ही यह सब हो रहा है। सरकार ऐसा केवल फिल्ड में नहीं कर रही है। सरकार ने बटालियन के जवानों को भी आत्म अनुशासन में रखने की यह शमिर्ली कोशिश की है। प्रदेश में नौ बटालियन ऐसी हैं जहां कमांडेंट ही पोस्ट नहीं है।जबकि हालिया ट्रांसफर लिस्ट से दो बटालियन में दो दो कमांडेंट पोस्ट हो गए हैं। दो दो इसलिए क्योंकि फिल्ड से हटाकर बटालियन भेजे हैं पर जो पहले से बटालियन में तैनात है उसे हटाया ही नहीं गया है।

माथा देख कर तिलक

ये जलनखोरों की पुरानी बात है जो परंपरा से चली आ रही है। सरकार ने कहा है कि,पुलिस डिपाटर्मेंट बेहद डिसिप्लिन वाला डिपाटर्मेंट है,इसलिए जहां जिस पद के अनुसार उचित व्यक्ति मिलेगा वहां उसकी पोस्टिंग करेंगे। मतलब ये कि भई डीआईजी की पोस्ट नहीं है तो डीआईजी को कहीं पोस्ट नहीं करेंगे। अब जलनखोर पत्रकारों को उचका रहे हैं कि सरकार से पूछिए कांकेर दंतेवाड़ा में जो ऑफिस खुले हुए हैं डीआईजी के,वहां पोस्टिंग नहीं कर सकते तो धान चावल का स्टॉक रखने वाला गोदाम बनाने के लिए दे दें,क्योंकि चावल के लिए ना सरकार के पास जगह है ना भारतीय खाद्य निगम के पास। जलनखोर यह भी कोचक रहे हैं कि,अभी फिल्ड में जो तैनाती है उसमें कितने डीआईजी स्तर के एसपी हैं,सरकार को यह भी बताना चाहिए। लेकिन जैसा कि सब जानते हैं सहाफी सरकार का भक्त है और पूरा पूरा भक्त है। सरकार जो करती है ठीक करती है। सरकार यदि कुछ नहीं करती है तो केवल इसलिए नहीं करती है क्योंकि वैसा करना अनुशासित विभाग के लिए ठीक नहीं होता है। जलनखोरों की ऐसी कम और तैसी ज्यादा। सहाफी जोर से नारा लगा रहा है सुशासन सरकार ज़िंदाबाद, चाहें तो आप भी लगाएं।

ये कौन चित्रकार है

महीनों से लिस्ट लिस्ट लिस्ट की खूब चिल्लमचोट चली। कई स्तंभों में स्थाई कॉलम की तरह भविष्यवाणी लिखी जाती रही। अब वह भविष्यवाणी का कॉलम कुछ हफ़्तों तक थैंक्यू रहेगा। लेकिन इस लिस्ट के आने के बाद दो ज़िलों में हैरानी कम परेशानी ज़्यादा है। एक तो इंडस्ट्रियल डिस्ट्रिक्ट है। यह वह ज़िला है जहां कप्तान को लेकर बवाल की हद तक मामला है। समझना मुश्किल है कि,साहब पर करप्शन के छींटे जो दिखाए बताए जा रहे हैं वह आयोजित प्रायोजित है या सच्ची मुच्ची वाले हैं। इस जिले में लॉ एंड ऑर्डर का सितम अपनी जगह है।इंडस्ट्रियल इलाक़ा है तो ट्रांसपोर्ट से लेकर कबाड़ लोहा का टंटा अलग है।

मसला ये भी है कि,एफआईआर होती है और कोर्ट में धाँय से उड़ जा रही हैं जनवरी से लेकर जून तक कम से कम 15 एफआईआर को कोर्ट ने उड़ा दिया है। एक महिला डीएसपी तो खैर आईजी का इंटरफेयर ना होता तो रानी लक्ष्मी बाई की जय कर ही गई थी। एक और ज़िला सरहदी है। हार्ड कोर जज्बाती एक यहां भी कप्तान है। मसला इन जनाब को लेकर भी गहन गंभीर है। जज्बाती होना अच्छा है लेकिन बहुत जज़्बाती होना खुद के साथ साथ जहाज डुबोने वाला होता है। साहब के जाने पहचाने दुश्मनों ने जो कि उनके साथ दोस्त की तरह पेश आते हैं वही यह उड़ा रहे हैं कि,साहब को उनकी मर्जी के बगैर कोई छू नहीं सकता क्योंकि वे डायरेक्ट गुजरात के हैं।इसलिए लिस्ट में नाम आकर कट गया। अब मान लेते हैं कि यही सही बात है तो भी जिस अंदाज में कहीं जा रही है वह उस जज़्बाती अफसर के लिए पॉज़िटिव साउंड तो नहीं ही करती। लेकिन इन सबके दूर अपने राम का वही परमानेन्ट थ्योरी है – सरकार सुशासन की है तो जो भी है,जैसा भी आंय बांय सांय है वही सुशासन है,और हर तरफ अच्छे ही अच्छे और केवल तनखा पर जीने वाले लोग हैं हर बात केवल अफवाह है।

कलेक्टर साहब का ऑर्डर

उत्तर छत्तीसगढ़ के एक जिले में जमीन का खेल हो लिया। मसला ये है कि,उद्योगपति सेठ जी परिवार ने पत्नी जी के नाम जमीन खरीदी। बवाल तब हुआ कि,जब यह बात सामने आई कि,बेचने वाले ने तो तीन एकड़ बेची थी कागज में जमीन तीस एकड़ बिक गई थी। अखबारों में छपा। कलेक्टर साहब ने जांच बैठा दी। प्रतिवेदन आया कि,हाँ जी गड़बड़ घोटाला तो हुआ है। कलेक्टर साहब ने 16 जून को मामले में एफआईआर कराने तहसीलदार को पत्र लिखकर आदेश जारी कर दिया। इसके बाद कलेक्टर साहब चल दिए छुट्टी पर मिथिलांचल। खेल आगे हुआ। तहसीलदार साहब के ऑफिस से एसपी ऑफिस के बीच क़दमों की दूरी है। लेकिन वह आदेश लेकर तहसीलदार पहुँचे ही नहीं। सहाफी ने तहसीलदार साहब से दरयाफ़्त की और पूछा कि,कलेक्टर साहब के आदेश का क्या हुआ,आपने पत्र आगे कब भेजा तो उन्होंने कहा– ह्लबाबू बता पाएंगे ।ह्व सहाफी ने दो दिन बाद फिर से तहसीलदार साहब से पूछा – ह्लसाहब नमस्ते। आपके बाबू ने आपको क्या बताया ?ह्व तहसीलदार साहब समझदार थे, उन्हें पता था फालतू सवाल का जवाब नहीं देना चाहिए,तो कोई जवाब ही नहीं आया। वैसे इस मसले पर कांग्रेसी तूफान मचा रहे हैं। कांग्रेसी आईजी दफ़्तर पहुंच कर बवाल टंटा कर आए। आईजी साहब बहादुर ने फरमाया कि जांच होगी। लेकिन मसला ये है कि,कलेक्टर का आदेश एसपी तक नहीं पहुंचा है तो जांच होगी कैसे। वैसे अफवाह यह भी उड़ी है कि,उद्योगपति परिवार ने दो मंत्रियों की सहज उपलब्धतता के सार्थक सहयोग से पीड़ित के साथ जानें क्या किया है कि,वह भी सहमा सहमा चुप बैठ जो हुआ वही सुशासन है का मंत्र जाप कर रहा है।

यही है सुशासन

एक जिले में दो महीने के भीतर कलेक्टर का तबादला कर दिया गया है। इस आदेश के पीछे कई तरह की खबरें हैं। दिलचस्प यह है कि,हर तैरती खबर कलेक्टर को निदीष और दबाव के आगे नहीं झुकने वाला क़रार दे रही है। अफवाहें जो तैर रही हैं वह एक मंत्री के कुपित होने का इशारा कर रही हैं। इस क़ि स्से को निजी अस्पताल में जच्चा बच्चा की मौत के बाद हुई कार्यवाही से जोड़ा जा रहा है। किस्सागोई में है कि मंत्री जी के कोप मिश्रित स्वर में शब्द पर नियंत्रण नहीं था, जिसका प्रतिरोध कलेक्टर ने कर दिया। बुरी तरह बिफरे मंत्री जी ने उपर फोन खड़का दिया। जिसके बाद बड़े साहब ने फोन कलेक्टर को खड़का दिया। यहाँ कलेक्टर ने बड़े साहब को घटना बताई सुनाई लेकिन बड़े साहब ने जोर चमकाते हुए कह दिया कि,अभी ट्रांसफर हो जाएगा तो क्या करोगे। इस बात को सुनने के बाद कलेक्टर ने बेसाख़्ता कह दिया – ह्लकर दीजिएगा साहब क्या कर लूँगा।ह्वइसके बाद अगली सुबह ट्रांसफर ऑर्डर जारी हो गया।

पानी साफ कराईए भाई साब

भाई साब लोगों की पार्टी में कुछ न कुछ तो यूँ ही होता रहता है। लेकिन अब सोशल मीडिया पर भी हक्का बक्का कर देने वाली हरकत हो जा रही है। दो मामलों ने गजब ध्यान खींचा है एक तो रामगोपाल के मामले में बीजेपी ने पोस्टर जारी किया उसमें पत्रकार की फोटो चिपका दी गई। फिर मसला थमा ही था कि,तीजन बाई को लेकर एक पोस्ट जारी की गई जिसमें बताया गया कि,सरकार तीजन बाई के नाम पर राज्य अलंकरण जारी करेगी। जाहिर है इसमें सीएम का नाम लिखना था। सोशल मीडिया सम्हालने वालों ने सीएम का नाम भूपेश बघेल लिख दिया। यह भी जानें रखिए कि,इस पर नींद नशा तब चटका जब फोन सीधे इंटेलिजेंस से खड़का और पूछा गया कि भैया पोस्ट करने के पहले पढ़ तो लिया करो। फिर आनन फानन पोस्ट डिलीट हुई और फिर से पोस्ट हुआ। अपने राम का बस इतना निवेदन है कि,सत्ता में रहते हैं तो पानी में नशा आ ही जाता है,संगठन के भाई साहब लोग देख लें टंकी के पानी में गड़बड़ है या पूरे कुएँ में।

धन भी गया और..

ये जो सोशल मीडिया है और इसके लिए जो स्मार्ट मोबाइल है, वो खेल बनाता भी है और बिगाड़ता भी है। लेकिन अपन आस्थावान व्यक्ति हैं। अपना यह मानना है कि,जो होता है सब 'ईश्वर' की मर्जी से होता है। ये 'ईश्वर' की ही मर्जी है कि, एक ऑडियो क्लिप वायरल हो रहा है। यह ऑडियो क्लिप यह बता रहा है कि,महिला नेत्री को एल्डरमेन बनाने के लिए पचास हजार काजू कतली ले ली गई। महिला नेत्री इस ऑडियो क्लिप में बता रही हैं कि लेने वाले ने विधायक जी को देने के नाम पर ले लिया। अब हुआ ये है कि,वो बनी नहीं हैं और काजू कतली भी वापस नहीं हो रहा है। जाहिर है ऑडियो तो वायरल होगा ही।

उनको सिगरेट दीजिए

रामगोपाल जी इन दिनों एसीबी के ऑनरेलबल गेस्ट हैं। यूं उनका जलवा इसलिए भी है क्योंकि वो बीजेपी के एक ओल्ड गार्ड के समधी साहब भी हैं। अब राजनीतिक झुकाव का मसला है कि वे कांग्रेस में हैं।बल्कि कोषाध्यक्ष भी हैं। जैसे ही रामगोपाल एसीबी के ऑनरेबल गेस्ट हुए कांग्रेस ने पूरे प्रदेश में आंदोलन का एलान कर दिया। सहाफी यह नहीं समझ पा रहा है कि,जब इसे दमन की कार्यवाही बताकर विरोध करना था तो तब ही क्यों नहीं किए जब ईसीआईआर से लेकर एफआईआर तक में नाम दर्ज हो गया, अब तो यह भी दिख रहा है कि वैसा विरोध हो ही नहीं रहा जो दर्ज किया जा सके। फिर ये भी एक मुद्दा है कि,कागज में कोषाध्यक्ष तो रामगोपाल हैं ही,तो कांग्रेस विज्ञप्ति में सीधे कोषाध्यक्ष रामगोपाल लिख कर एजेंसियों का विरोध क्यों नहीं कर रही है।

हजारों में अकेला

एक रेंज आईजी साहब के साथ पता नहीं क्या मसला है, जहां भी जिस भी रेंज में जाते हैं उनका नाम आंय बांय वजह से चर्चा में आने लगता है। एकाध जगह हो तो समझ भी आए कि साहब गलत नहीं है बाक़ ी लोग गलत हैं। लेकिन अगर हर जगह का यही मसला हो जाए तो फिर हकीम लुकमान भी क्या करेगा। अफवाह है कि साहब ने इन दिनों फरमान जारी किया है कि,कोई भी चार दिन से उपर की छुट्टी पर जाएगा तो उनकी अनुमति से ही जाएगा। उनके दुश्मन उड़ा रहे हैं कि हर एफआईआर से लेकर हर कार्यवाही तक का पूरा ब्यौरा भी साहब को चाहिए। याने कि जब तक उनकी हाँ नहीं होगी एफआईआर भी रुक जाएगी।इस रेंज में एक थाने का भी जिक्र आता है जिसे लेकर अफवाहें हैं कि, जिस ज़िले में यह थाना है वहां के थानेदार को ना बुलाकर दिगर ज़िले से थानेदार बुलाकर प्रभार दे दिया गया है। लेकिन इन सब सच्ची झूठी बातों से अलग अपना मानना है कि,लोगों को साहब में अच्छा भी खोजना चाहिए। एक गीत भी तो है –'वो तो है अलबेला..हजारों में अकेला..सदा तुमने एब देखा हुनर को ना देखा।' हालाँकि सहाफी ने जब यह बात उनके पूर्व पदस्थापना वाले जिला रेंज में कही तो पलट कर जवाब आया–'आप ही खोज कर वो हुनर बता दो पत्रकार जी।पर खोज जरुर दो।'

बलौदाबाजार वनमण्डल में 'युवान' कार्यक्रम के साथ मनाया गया वन महोत्सव

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ में वन विभाग द्वारा नई पीढ़ी को प्रकृति और वन्यजीव संरक्षण से जोड़ने के लिए 'युवान' कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। इस पहल के तहत राज्य के युवाओं को 'युवान वालंटियर' (ग्रीन लीडर) बनाया जाता है और वन महोत्सव जैसे आयोजनों में उन्हें पौधारोपण के साथ-साथ वनों के पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता का विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है।

वन मंत्री केदार कश्यप के निर्देशानुसार बलौदाबाजार वनमण्डल में वनमण्डलाधिकारी धम्मशील गणवीर के मार्गदर्शन में प्रत्येक शनिवार आयोजित किए जाने वाले "युवान (YUVAN-Youth for Nature)" कार्यक्रम के तहत वन महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को वन भ्रमण कराया गया तथा पौधारोपण, सीड बॉल रोपण और प्रकृति शिक्षा जैसी गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति

जागरूक किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों और स्थानीय समुदाय को वन, वन्यजीव, जल एवं मृदा संरक्षण, जैव विविधता तथा पर्यावरण संरक्षण की व्यवहारिक जानकारी देना और उन्हें प्रकृति संरक्षण से जोड़ना है।

देवपुर, सोनाखान, बारनवापारा और बल्दाकछार वन परिक्षेत्रों में आयोजित कार्यक्रमों में 200 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों को वन भ्रमण कराते हुए वनों और वन्यजीवों का महत्व, पर्यावरण संतुलन, जल एवं मृदा संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग की जानकारी दी गई। उन्हें बताया गया कि पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वन महोत्सव के अंतर्गत "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान भी चलाया गया। इस दौरान विद्यार्थियों, शिक्षकों, वन प्रबंधन समितियों और ग्रामीणों ने मिलकर पौधारोपण किया। चांदन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में 43 छायादार पौधे लगाए गए। विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति रचनात्मक सोच विकसित करने के लिए निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को आम, कोसम, चार और बहेड़ा जैसी स्थानीय एवं फलदार प्रजातियों के सीड बॉल तैयार करने और उनका रोपण करने की जानकारी दी गई। उन्हें प्राकृतिक पुनर्जनन, बीज संरक्षण और सीड बॉल तकनीक के महत्व के बारे में व्यवहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया। विद्यार्थियों को मिट्टी के कटाव को रोकने के उपाय, जल संरक्षण, जैव विविधता का महत्व, औषधीय एवं स्थानीय पौधों की उपयोगिता तथा मानव-वन्यजीव सहअस्तित्व के बारे में विस्तार से बताया गया। साथ ही वन विभाग द्वारा किए जा रहे संरक्षण कार्यों और वन प्रबंधन समितियों की भूमिका से भी अवगत कराया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ शिक्षक, वन प्रबंधन समितियों के पदाधिकारी, महिला समूह, ग्राम पंचायत प्रतिनिधि, स्थानीय ग्रामीण, वन अधिकारी, वन कर्मचारी और सुरक्षा श्रमिकों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई। इससे युवान कार्यक्रम प्रकृति शिक्षा के साथ-साथ जनभागीदारी को बढ़ावा देने का प्रभावी माध्यम बन रहा है।

2000 से अधिक महिलाओं की सहभागिता से गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ नाम

नारी संगम सीजन-3 की ऐतिहासिक सफलता पर समीक्षा बैठक, मेंबर्स सम्मानित

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

जेसीआई रायपुर वामा कैपिटल द्वारा आयोजित "नारी संगम सीजन-3" की ऐतिहासिक सफलता के उपलक्ष्य में शंकर नगर स्थित विस्तारा भवन में समीक्षा बैठक एवं मेंबर्स सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मार्गदर्शन इंटरनेशनल ट्रेनर राजेश अग्रवाल ने किया। उन्होंने "लव यू जिंदगी" थीम पर आयोजित इस ट्रेनिंग की विभिन्न उपलब्धियों और भविष्य में इसे और अधिक प्रभावी बनाने को लेकर विस्तार से चर्चा की।

उल्लेखनीय है कि इस भव्य एवं प्रेरणादायक ट्रेनिंग में लगभग 300 संस्थाओं से 2000 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम ने नया इतिहास रचते हुए गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया। बैठक के दौरान जेसीआई रायपुर वामा कैपिटल की जनरल बॉडी मीटिंग भी हुई। इसमें नारी संगम के बाद आयोजित होने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सेवा प्रकल्पों पर चर्चा की गई। सदस्यों ने आगामी आयोजनों को और भव्य बनाने के लिए सुझाव दिए।

इस अवसर पर कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले सदस्यों एवं पीडीज को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। उनके समर्पण और मेहनत की सराहना की गई। पूरे आयोजन में उत्साह और आपसी सौहार्द का माहौल रहा।

इस ऐतिहासिक सफलता का श्रेय मेंटर राजेश अग्रवाल, प्रेसिडेंट डॉ. धृति वैभव शर्मा, फाउंडर प्रेसिडेंट लीना वाहेर, चैप्टर कन्वेनर रूपाली दुबे, चैप्टर इंचार्ज आंचल पंजवानी, प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर जया अरोड़ा, समस्त पास्ट प्रेसिडेंट्स और जेसीआई रायपुर वामा कैपिटल की पूरी टीम को दिया गया। जानकारी प्रोग्राम की मीडिया प्रभारी सुमन दीवान और दीया मूलचंदानी ने दी।

चंडी मंदिर के पीछे जंगल में चल रहा था जुए का अड्डा, पुलिस ने मारा छापा

नई दृष्टिबिंदु / महासमुंद

जिले में जुए के खिलाफ लगातार चलाए जा रहे अभियान के तहत थाना बागबाहरा पुलिस ने चंडी मंदिर के पीछे पहाड़ी में चल रहे जुए के अड्डे को ध्वस्त कर दिया। छापे में 12 जुआरी गिरफ्तार किए गए जबकि 4 मौके से फरार हो गए। पुलिस ने मौके से 20 लाख 35 हजार 100 रुपये से अधिक का सामान जब्त किया है।

पुलिस अधीक्षक कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार 13 जुलाई को मुखबिर से सूचना मिली कि ग्राम घुचापाली स्थित चंडी मंदिर के पीछे जंगल में कुछ लोग 52 पत्ती ताश से पैसे का दांव लगाकर "काट पत्ती" जुआ खेल रहे हैं। सूचना पर पुलिस ने रात में घेराबंदी कर दबिश दी। छापे के दौरान 12 आरोपियों को रंगे हाथ पकड़ा गया। मौके से 3 लाख 60 हजार 100 रुपये नगद, 14 नग मोबाइल, 5 मोटर साइकिल, 1 स्कूटी, 2 कार, 9 बंडल ताश, दरी और उच्छ बल्ब जब्त किया गया। जब्त संपत्ति की कुल कीमत 20 लाख 35 हजार 100 रुपये है।

आरोपियों के खिलाफ अपराध क्रमांक 124/26, धारा 3(2) छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 और धारा 112 बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। फरार 4 आरोपियों की तलाश की जा रही है।

गिरफ्तार आरोपी में प्रेमलाल पटेल पटेवा, सतीश चंद्राकर बागबाहरा, विनय सिंह राजपूत जोगीडिपा, ललित कुमार निषाद सिंघनपुर, रामाकांत शुक्ला झलप, यशवंत साहू घुचापाली, रामलाल निषाद जामगांव, किशन कोसरिया झलप, शंभू लाल यादव मधुबन, कादिर खान कोमाखान, केशव देवांगन जोगीडिपा, खेमराज उर्फ राजू जैन कोमाखान शामिल हैं। फरार आरोपी में योगेश साहू जुनवानी, सदानंद चंद्राकर भालूचोवां, हरदेव चंद्राकर घुंचापाली, ललित पटेल दलदली। पुलिस ने बताया कि एक सप्ताह के भीतर यह चौथी जुआ रेड की कारवाई है। इन चार प्रकरणों में अब तक 26 जुआरियों को जेल भेजा जा चुका है और 3 लाख 75 हजार 910 रुपये नगद सहित कुल 34 लाख 21 हजार रुपये की संपत्ति जब्त की गई है।

मुख्यमंत्री बिजली बिल भुगतान समाधान योजना 30 सितंबर तक बढ़ी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी ने मुख्यमंत्री बिजली बिल भुगतान समाधान योजना-2026 की अवधि 30 सितंबर 2026 तक बढ़ा दी है। इसके साथ ही अब योजना का दायरा बढ़ाकर न्यायालयों में लंबित बिजली बिल संबंधी प्रकरणों को भी इसमें शामिल किया गया है। प्रबंध निदेशक भीम सिंह कंवर ने बताया कि उपभोक्ताओं से मिल रहे उत्साहजनक प्रतिसाद को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। जिन उपभोक्ताओं के बिजली बिल संबंधी प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन हैं, वे न्यायालय से अपना प्रकरण वापस लेकर योजना के अंतर्गत आवेदन कर सकते हैं। नियमानुसार औपचारिकताएं पूरी करने पर उन्हें उपलब्ध छूट एवं अन्य लाभ दिए जाएंगे। उन्होंने पात्र उपभोक्ताओं से अपील की कि वे अपने निकटतम वितरण केंद्र या संबंधित कार्यालय से संपर्क कर योजना की जानकारी लें और निर्धारित प्रक्रिया पूरी कर लाभ उठाएं।

योजना के तहत मिलने वाला लाभ : योजना के तहत निम्नदाब घरेलू, बीपीएल एवं कृषि श्रेणी के अशासकीय उपभोक्ताओं को बकाया बिजली बिल की मूल राशि और अधिभार में नियमानुसार छूट दी जा रही है। **अब तक की स्थिति:** - 8 लाख 61 हजार 38 सक्रिय उपभोक्ताओं का पंजीयन हुआ। इन पर 1,493 करोड़ रुपये बकाया था। इन्हें 745.61 करोड़ रुपये की छूट मिली और 85.22 करोड़ रुपये का भुगतान प्राप्त हुआ। 1 लाख 42 हजार 799 उपभोक्ताओं ने प्रकरण का संपूर्ण समाधान लिया। इन्हें मूल राशि में 28.28 करोड़ और अधिभार में 50.60 करोड़ की छूट दी गई।

GOSWWAMI
FLEX PRINTING
ADVERTIZER
भिलाई में सबसे सस्ता, सबसे अच्छा
Hoardings • Flex Banner • Vinyl Printing
One Way Vision • Glow Sign Board
93290-13334, 74711-15735
goswamiflex@gmail.com
Address - 3rd Floor Shop No-1, Arora Tower, M.C. Market

अर्चना
फ्लाई ऐश ब्रिक्स
निर्माता एवं विक्रेता
हैवी इंडस्ट्रीयल एरिया, भिलाई
8 इंच एवं 9 इंच में उपलब्ध है।
संपर्क करें
9329960605, 9827160605, 9098639991

Baked by Suhani
Premium Homemade Cakes & Desserts
Birthday Cakes
Anniversary Cakes
Custom Theme Cakes
Serving Bhilai & Durg
baked.by.suhani
Suhani Singh
Premium Homemade Cakes & Desserts
Serving Bhilai & Durg
DM for Order
Followed by _s_andeep
Follow
Message
Order Now:
@baked.by.suhani
M0.6263734520

10वीं, 12वीं, स्नातक एवं स्नातकोत्तर पास छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य के लिए
फायर एवं सेफ्टी प्रशिक्षण
नौकरी में सहायक
प्रवेश प्रारंभ सत्र 2026-2027
निजी कंपनियां जैसे पावर प्लांट, सीमेंट प्लांट, स्टील प्लांट, कंस्ट्रक्शन सेक्टर में बहुत नौकरियाँ मिलती है।
प्रशिक्षण शुल्क में विशेष छूट
सरकारी मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र दिया जाएगा
फायर एवं सेफ्टी प्रशिक्षण में प्रवेश प्रारंभ

क्र.	पाठ्यक्रम का नाम	क्र.	पाठ्यक्रम का नाम
1.	फायर टेक्नोलॉजी एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	5.	पी. जी. कोर्स व्यावसायिक सेफ्टी, स्वास्थ्य व पर्यावरण मैनेजमेंट सिस्टम
2.	इंडस्ट्रियल सेफ्टी / पी. जी. इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6.	हैल्थ सेनेटरी इंस्पेक्टर
3.	बी.एस.सी. इन फायर सेफ्टी	7.	सब- फायर ऑफिसर
4.	पी. जी. कोर्स फायर एवं इंडस्ट्रियल सेफ्टी	8.	सर्टिफिकेट इन फायरमैन-इंडस्ट्रियल सेफ्टी

(An Authorized Training Centre of AEERO)
फायर सेफ्टी एवं डिजास्टर मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट
(मान्यता प्राप्त निजी प्रशिक्षण संस्थान)
कैंपस :- इंदिरा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल, सुपेला, भिलाई, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़
ADMISSION HELPLINE: 7697212782

BA
BCA
BCom
BBA
BSc
PGDCA
MSc CHEMISTRY
MSc BIOTECHNOLOGY
MSc BOTANY
MSc ZOOLOGY
MSc COMPUTER Sc
MSc MATHS
MA ENGLISH
MCom
BLib
MLib
DCA
MA CHHATTISGARHI
Deepak Advertisers
Affiliated to Hemchand Yadav University, Durg
SAI COLLEGE
Street-69, Sector-6, Bhilai
70248 86996
99770 01027

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100